वर्ष 05 | अंक 09 | सितम्बर 2023 | पृष्ठ 32

समाचार पत्र पंजी. संख्या : DELHIN/2018/76804

इन्द्रप्रस्थ संवाद

श्री कृष्ण जन्माष्टमी की शुभकामनाएं

/ivskdelhi /ivskdelhi /ivskdelhi /ivskdelhi /ivskdelhi.in

सितम्बर एवं अक्टूबर माह के पर्व-त्यौहार

दिनांक	दिन	त्यौहार	
6 सितम्बर	बुधवार	भाद्रपद कृष्ण सप्तमी (रात 7:58 तक) – श्री कृष्णजन्माष्टमी	
17 सितम्बर	रविवार	भाद्रपद शुक्ल द्वितीया – विश्वकर्मा पूजा	
18 सितम्बर	सोमवार	भाद्रपद शुक्ल तृतीया (सुबह 10:27 तक)–गणेश चतुर्थी, गणेश उत्सव, हरितालिका तीज	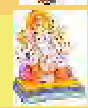
28 सितम्बर	गुरुवार	भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी – अनंत चतुर्दशी व्रत	
30 सितम्बर	शनिवार	आश्विन कृष्ण प्रतिपदा – पितृपक्ष प्रारंभ	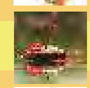
2 अक्टूबर	सोमवार	आश्विन कृष्ण तृतीया – गाँधी जयंती	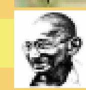
6 अक्टूबर	शुक्रवार	आश्विन कृष्ण सप्तमी – जिउतिया व्रत	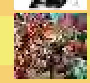
14 अक्टूबर	शनिवार	आश्विन कृष्ण अमावस्या – श्राद्ध अमावस्या	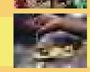
15 अक्टूबर	रविवार	आश्विन शुक्ल प्रतिपदा – शारदीय नवरात्र प्रारंभ	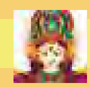
23 अक्टूबर	सोमवार	आश्विन शुक्ल नवमी – विजयादशमी	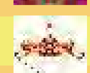
28 अक्टूबर	शनिवार	आश्विन शुक्ल पूर्णिमा – शरद पूर्णिमा, वाल्मीकि जयंती	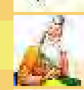
31 अक्टूबर	मंगलवार	कार्तिक कृष्ण तृतीया – सरदार वल्लभभाई पटेल जयंती	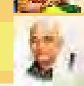

इन्द्रप्रस्थ विश्व संवाद केन्द्र

के डिजिटल प्लेटफार्म से जुड़ें एवं

सोशल मीडिया पर Follow करें

@IVSKdelhi.in

@IVSKdelhi

@IVSKdelhi

@IVSKdelhi

@IVSKdelhi

@IVSKDelhi

IVSK

समाचार पत्र पंजी. संख्या : DELHIN/2018/76804

इन्द्रप्रस्थ संवाद

सितम्बर - 2023

संपादक
बिपिन कुमार तिवारी

प्रबंधक, मुद्रक एवं प्रकाशक
रघुवीर कुमार गम्भीर

संपादकीय कार्यालय
इंद्रप्रस्थ संवाद, 8 बी/6428–29, प्रथम तल,
आर्यसमाज रोड, देवनगर, नई दिल्ली–110005
दूरभाष : 9136292824, 9717211723
www.ivskdelhi.in

प्रसार एवं विज्ञापन हेतु संपर्क

isamvad@gmail.com

इंद्रप्रस्थ विश्व संवाद केंद्र के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक रघुवीर कुमार गम्भीर द्वारा एम.के प्रिंटर्स
5516/5 न्यू चंद्रावल, दिल्ली–7 से मुद्रित एवं 8–बी/6428–29
आर्य समाज रोड, देवनगर, नई दिल्ली–110005 से प्रकाशित
संपादक : बिपिन कुमार तिवारी
(पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए उत्तरदायी

इन्द्रप्रस्थ संवाद पत्रिका के सितम्बर 2023 के अंक को अपने मोबाइल फोन में पढ़ने के लिए अपने मोबाइल के कैमरा से यहां दिए गए क्यू आर कोड (QR Code) को स्कैन करें।

सभी लेखों में लेखकों के स्वतंत्र विचार हैं।
संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

इस अंक में ....

आवरण कथा 06

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

दिल्ली के प्रमुख श्रीकृष्ण जन्माष्टमी आयोजन	07
शिक्षक दिवस	08
शिकागो धर्म संसद	09
पत्तलों से बचेगा पर्यावरण	10
समाज को अंत्योदय का विचार देने वाले पंडित दीनदयाल उपाध्याय	11
दिल्ली का प्राचीन गांव शाहपुर जाट	12
गरीब छात्रों के लिए वरदान है निःशुल्क कोचिंग योजना	14
बहनों के लिए ब्यूटीपार्लर प्रशिक्षण	15
दैनिक आहार में फाइबर है जरुरी	16
दिल्ली में 'भारत मंडपम' राष्ट्र को समर्पित	17
अनुपयोगी सामानो से बने पार्क में दिखाई देगा भारत का इतिहास	19
पारंपरिक कारीगरों व शिल्पकारों के लिए पीएम विश्वकर्मा योजना	20
कालकाजी मंदिर में अब सिर्फ पंचमेवा का लगेगा भोग	21
हरितालिका तीज	22
विश्वकर्मा पूजा	23
गणेश उत्सव	24
अपने बच्चों को बुलिंग से कैसे बचाएं	25
लिखा-पढ़ी की भाषा ही है हमारी मातृभाषा	26
हीरों का हार	28
बाल मंच	29

हमसे जुड़ें

यदि आप लिखते हैं तो आप अपना लेख या कविता हमें ईमेल या व्हाट्सएप्प के माध्यम से भेजें। आप अपनी कॉलोनी / बस्ती से जुड़े समाचार तथा उत्सवों, प्रेरणादायक कार्य/उपलब्धि, सेवा कार्य, पर्यावरण इत्यादि से संबंधित सूचना हम तक पहुचाएं। आप इन्द्रप्रस्थ संवाद में छपे लेखों पर भी अपने विचार हम तक अवश्य भेजें।

Email - isamvad@gmail.com WhatsApp No. - 9717575649

पाठकनामा

इन्द्रप्रस्थ संवाद अपने पाठकों के विचार को बहुत महत्त्व देता है। अपने नियमित पाठकों से उनके विचार को जानने के उद्देश्य से इन्द्रप्रस्थ संवाद पत्रिका संपादक मंडल के सदस्यों ने पाठकों से बातचीत कर पत्रिका के बारे में उनके अनुभव, सुझाव एवं विचार जाना। पाठकों से हुई बातचीत के अंश –

इंद्रप्रस्थ संवाद पत्रिका हमारी धर्म संस्कृति की जानकारी देने वाली अच्छी पत्रिका है। मेरे परिवार में मेरी दोनों बिटिया भी इस पत्रिका को पढ़ती है। पत्रिका में दिल्ली के इतिहास से जुड़ी सभी जानकारियां रहती है। मेरा सुझाव हैं कि इंद्रप्रस्थ संवाद में अगर छात्रों के लिए भी कुछ करियर से जुड़ी जानकारी हो तो बहुत अच्छा रहेगा। छात्रों के लिए अगर सामान्य ज्ञान की जानकारी इस पत्रिका में रहेगी तो छात्रों को बहुत लाभ होगा।

– विद्यापति शर्मा, एस–16/1922, संगम विहार, दिल्ली

हम काफी लंबे समय से इंद्रप्रस्थ संवाद पत्रिका पढ़ते आ रहे है। मेरे दोनों बेटे भी इस पत्रिका को हर माह पढ़ते हैं। इस पत्रिका में हमारे धर्म, समाज. तीज त्योहार और इतिहास से जुड़ी सभी जानकारियों का समावेश रहता है। यह पत्रिका एक संस्कारी पत्रिका है जिसे मैं एक बार में ही पहले पेज से अंतिम पेज तक पढ़ता हूं।

– योगेश मलिक, एच–1/133–134, जहांगीरपुरी, दिल्ली

पत्रिका का जुलाई माह का अंक भगवान भोले नाथ जी को समर्पित था जो बहुत ही सुंदर बना था। इस पत्रिका में हमारे धर्म और इतिहास से जुड़ी सभी जानकारियां रहती है। जुलाई अंक में प्लास्टिक के उपयोग से कैसे बचे इस बारे में बहुत अच्छी जानकारी थी। हमारे बच्चों के लिए भी बेहद उपयोगी सामग्री पत्रिका में दी जाती है। इस पत्रिका की सबसे अच्छी बात मुझे यह लगती हैं कि आने वाले पर्व त्यौहारों से जुड़ी जानकारी इसमें पहले से ही दे दी जाती है जिससे हमें पर्व त्यौहार मनाने में आसानी हो जाती है।

– रघुवीर सैनी, गांव झड़ौदाकलां, दिल्ली

इंद्रप्रस्थ संवाद पत्रिका अपने छोटे रुप में ज्ञान का बड़ा भंडार है। इस पत्रिका में हमें सभी तरह की जानकारी प्राप्त हो जाती है। समाज, इतिहास, पर्व त्यौहार, हिंदू धर्म के महापुरुषों से जुड़ी जानकारी हमें इस पत्रिका से मिलती है। जुलाई अंक में हमने बुराड़ी के खंडेश्वर शिव मंदिर के बारे में पढ़ा तो हमें पता चला कि यह हमारे नजदीक ही है फिर हमने वहां जाने का फैसला किया। यह पत्रिका समाज को जागरुक करने एवं नई–नई जानकारी देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

– विनोद कुमार गर्ग, इंद्रप्रस्थ

मेरा परिवार इंद्रप्रस्थ संवाद पत्रिका का नियमित पाठक है। वैसे तो पत्रिका में सभी आलेख बहुत अच्छे होते है मगर जुलाई अंक में कांवड़ यात्रा को लेकर बहुत अच्छा लेख था। जुलाई अंक में ही हमारे क्षेत्र के खंडेश्वर शिव मंदिर के बारे में बहुच अच्छा लेख दिया गया था। मेरा सुझाव हैं कि पत्रिका में लोगों के स्वास्थ्य से जुड़ी जानकारियों को अगर बढ़ा दिया जाए तो पत्रिका और भी अधिक लोकप्रिय होगी। पत्रिका में बच्चों के ज्ञान के लिए और अधिक जानकारियां रहनी चाहिए। यह पत्रिका हिंदू समाज की बेटियों को जागरुक करने में भी बहुत महत्वपूर्ण साबित होगी।

– उमेश त्यागी, झडौदा गांव, दिल्ली

इन्द्रप्रस्थ संवाद पत्रिका में प्रकाशित लेखों को लेकर आपके जो भी विचार या सुझाव हों आप हमें व्हाट्स एप्प या ईमेल के माध्यम से भेज सकते हैं

व्हाट्स एप्प नंबर – 9717575649 ईमेल – isamvad@gmail.com

सकारात्मक भाव जरूरी है

इन्द्रप्रस्थ संवाद के सभी पाठकों को श्री कृष्ण जन्माष्टमी, विश्वकर्मा पूजा, गणेश उत्सव, श्री गुरु ग्रंथ साहिब प्रकाश उत्सव एवं हरितालिका तीज की बहुत बहुत शुभकामनाएं।

हमारा देश, हमारी संस्कृति, हमारा समाज एक उत्सवधर्मी समाज है। समाज के साथ मिलकर खुशी एवं उत्सव मानना हमारी संस्कृति है, हमारी पहचान है, हमारी ताकत है। यही वह शक्ति है जिसने हमारे धर्म, हमारी संस्कृति को हजार वर्षों तक लगातार हुए आघात के बाद भी बचाए रखा है।

हम हर परिस्थिति में सकारात्मक भाव को बनाए रखते हैं। परिस्थिति चाहे कितनी भी विकट हो हम निराशा एवं नकारात्मकता को अपने ऊपर हावी नहीं होने देते हैं। हमारे पर्व–त्यौहार भी यही संदेश देते है। धैर्य एवं हर परिस्थिति में सकारात्मक भाव बनाए रखने का भगवान श्री कृष्ण के जीवन से बड़ा उदाहरण क्या हो सकता है। इस माह में हम सभी बड़े उत्साह एवं श्रद्धा के साथ श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मना रहे हैं। जब भगवान श्री कृष्ण का जन्म हुआ तब उनके माता–पिता कंस के कारावास में यातना झेल रहे थे, उनके सात भाईयों को पैदा होते ही कंस मार चूका था, पैदा होते ही श्री कृष्ण की अपनी जननी को त्यागना पड़ा। बचपन से ही उनकी हत्या करने के लिए कंस द्वारा कई तरह से लगातार हमले होते रहे। लेकिन उन्होंने कभी अपना धैर्य नहीं खोया। वह अपना कर्म करते रहे, देव–मानव सबका कल्याण करते रहे। वह मथुरा तब तक नहीं गए जब तक कंस का बुलावा नहीं आया। जिस कंस ने उनके माता–पिता पर इतना अत्याचार किया, उनके भाईयों की हत्या की, उनको मार डालने की लगातार कोशिश की उस कंस को समाप्त करने के लिए भी श्री कृष्ण ने प्रतीक्षा की। भगवान श्री कृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेते हुए हमें भी अपने जीवन में तनाव और जल्दबाजी से बचना चाहिए तथा धैर्य के साथ सही समय की प्रतीक्षा करना चाहिए।

जब संपूर्ण समाज की सुरक्षा का प्रश्न आया तो उन्होंने गोवर्धन पर्वत उठाया, समाज की सुरक्षा के लिए अपने सम्मान की चिंता न करते हुए मथुरा को भी त्याग दिया और द्वारका नगरी चले गए। गाय को सम्मान एवं सुरक्षा प्रदान कर उन्होंने समाज के अर्थ तंत्र को मजबूत किया। जब द्रौपदी के सम्मान रक्षा की बात आई तो उन्होंने स्वयं जाकर नारी सम्मान की रक्षा की। जब धर्म क्षेत्र कुरुक्षेत्र में अर्जुन मोह एवं निराशा के कारण अपने कर्तव्य पथ से विमुक्त होने लगे तो श्री कृष्ण ने उन्हें गीता का उपदेश देकर उन्हें उनका कर्म पथ दिखाया।

हमें भी अपने जीवन में सकारात्मकता एवं उत्साह को बनाए रखते हुए अपने कर्म को करते रहना चाहिए।

–बिपिन कुमार तिवारी

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

इस वर्ष श्री कृष्ण जन्माष्टमी 6 सितम्बर 2023 को है।

भारत भूमि वह भूमि है जहां जब भी धर्म की हानि होती है, तो भगवान धर्म की पुनर्स्थापना हेतु इस भूमि पर अवतार लेते हैं।

हमेशा धर्म के पक्ष में खड़े हों

कौरवों ने साम्राज्य का आधा हिस्सा पांडवों को नहीं दिया, जिसके वे वैधानिक अधिकारी थे। दुर्योधन सम्पूर्ण राज्य पर अपना प्रभुत्व चाहता था। श्री कृष्ण ने पांडवों का पक्ष लिया और हर तरह से उनका साथ दिया । उन्हें अपने पक्ष को सुदृढ़ करने और बढ़ाने में सहायता की। इससे हमें शिक्षा मिलती है कि जो सही है उसके लिए खड़े रहो, भले ही वह कितना भी निर्बल हो।

मित्र के कभी न भूलें

आप जीवन में चाहे जो भी ऊंचाई प्राप्त कर लें, अपने मित्रों को कभी न भूलें। श्री कृष्ण का एक सहपाठी थे सुदामा, वह बेहद गरीब थे और उसके पास खाने पीने के लिए कुछ भी नहीं था। अपनी पत्नी की सलाह पर, वह अपने मित्र श्री कृष्ण से मिलने के लिए इस उम्मीद में पैदल चलकर द्वारका आए की कृष्ण उनकी गरीबी दूर करने में कुछ सहायता अवश्य करेगें। द्वारका में श्री कृष्ण ने अपने मित्र सुदामा का स्वागत किया और पूरा सम्मान दिया। सुदामा अपने मुंह से किसी प्रकार की मांग या अनुरोध नहीं किया किंतु श्री कृष्ण ने धन धान्य से संपन्न बनाकर सुदामा का जीवन बदल दिया।

☛ भगवान कृष्ण का जन्मदिन, श्री कृष्ण जन्माष्टमी,भाद्रपद में कृष्ण पक्ष के आठवें दिन (अष्टमी) को मनाया जाता है।

भगवान श्री कृष्ण ने हमें यह सीख दी की अपने मित्रों को कभी न भूलें और जब उन्हें आपकी आवश्यकता हो तो आप उनकी सहायता करें। मित्र हमारे जीवन के सबसे मूल्यवान उपहार हैं।

जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा हो रहा है, जो होगा वह भी अच्छा ही होगा।

दिल्ली के प्रमुख श्रीकृष्ण जन्माष्टमी आयोजन

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी दिल्ली की सभी कालोनियों एवं बस्तियों में बड़े धूमधाम से मनायी जाती है। सभी राधाकृष्ण एवं लक्ष्मी नारायण मंदिरों को श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर सुन्दर एवं भव्य तरीके से सजाया जाता है तथा पूरी कॉलोनी एवं बस्ती के लोग भगवान श्री कृष्ण का दर्शन करने मंदिर पहुँचते हैं तथा इस उत्सव का आनंद लेते हैं। परन्तु दिल्ली के कुछ ऐसे बड़े मंदिर हैं जहाँ श्री कृष्ण जन्माष्टमी बड़ी भव्यता के साथ मनाई जाती है जिसे देखने पूरी दिल्ली से लोग आते हैं।

श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर (बिड़ला मंदिर)

श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर या (बिड़ला मंदिर) बहुत ही प्रसिद्ध, भव्य एवं लोकप्रिय मंदिर है जो जन्माष्टमी पर अपनी भव्यता और लुभावनी सजावट के लिए जाना जाता है। भगवान कृष्ण के जन्म का उत्सव मनाने के लिए, पूरे मंदिर को प्रकाश एवं खूबसूरत फूलों से सजाया जाता है। जन्माष्टमी के दिन पूरी दिल्ली से श्रद्धालु बिड़ला मंदिर पहुंचते हैं।

श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर – मंदिर मार्ग, गोल मार्केट के पास स्थित है।

इस्कॉन मंदिर, ईस्ट ऑफ कैलाश

1998 में बना ये खूबसूरत मंदिर दिल्ली के प्रमुख आकर्षणों में से एक है। इस दिव्य और भव्य मंदिर में राधा और कृष्ण की सुंदर मूर्तियां स्थापित हैं। श्री कृष्ण जन्माष्टमी के दिन यहाँ बहुत भव्य सजावट एवं तैयारी की जाती है तथा बड़ी संख्या में श्रद्धालु मंदिर पहुँचते हैं।

इस्कॉन मंदिर – हरे कृष्णा हिल, मेन रोड, संत नगर, ईस्ट ऑफ कैलाश में स्थित है।

इस्कॉन मंदिर, पंजाबी बाग

दिल्ली के पंजाबी बाग में भी इस्कॉन मंदिर है। जन्माष्टमी के दिन मंदिर बहुत ही अच्छी तरह से सजाया जाता है तथा श्रद्धालुओं की भी काफी भीड़ होती है।

यहां पहुंचने के लिए नजदीकी मेट्रो स्टेशन शिवाजी पार्क मेट्रो स्टेशन है।

छत्तरपुर मंदिर

दक्षिणी दिल्ली में स्थित छत्तरपुर मंदिर को जन्माष्टमी को ध्यान में रखकर बेहद खूबसूरत तरीके से सजाया जाता है। जन्माष्टमी पर श्रद्धालुओं की अच्छी खासी भीड़ देखने को मिलती है।

यहां पहुंचने के लिए सबसे नजदीकी मेट्रो स्टेशन छतरपुर है।

आत्मा ना पैदा होती है, न मरती है।

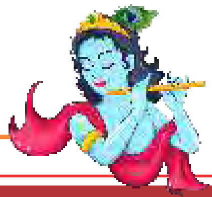

शिक्षक दिवस

डॉ. श्याम नारायण पाण्डेय

भारत में शिक्षक दिवस को पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्लीराधाकृष्णन के जन्मदिन (5 सितंबर) के रूप में मनाया जाता है।

कोई बच्चा अपने माता-पिता के बाद सबसे ज्यादा यदि किसी व्यक्ति से सीखता है तो वह शिक्षक ही होता है।

शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी में नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, व्यावसायिक आदि मूल्यों का संचरण करने का प्रयास करना चाहिए।

भारत में हर वर्ष 5 सितंबर को शिक्षक दिवस (टीचर्सडे) के रूप में मनाया जाता है। इस दिन विद्यालयों और महाविद्यालयों में कई प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। यह दिन हमारे जीवन में शिक्षक के महत्व को बताता है। हम सब जानते हैं कि किसी भी व्यक्ति के जीवन में शिक्षक का बड़ा महत्व होता है क्योंकि कोई बच्चा अपने माता–पिता के बाद सबसे ज्यादा यदि किसी व्यक्ति से सीखता है तो वह शिक्षक ही होता है। शिक्षक एक बच्चे के भविष्य के निर्माण में बड़ी भूमिका निभाता है। इसी कारण से भारत में गुरु – शिष्य परंपरा को बेहद महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। जीवन में शिक्षक के इस महत्व को शिक्षक दिवस परिलक्षित करता है।

भारत में शिक्षक दिवस को पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्लीराधाकृष्णन के जन्मदिन (5 सितंबर) के रूप में मनाया जाता है।

डॉ. सर्वपल्लीराधाकृष्णन एक महान व्यक्तित्व थे। उन्होंने देश के प्रथम उप–राष्ट्रपति के साथ ही द्वितीय राष्ट्रपति का पद सुशोभित किया। उन्होंने अपने जीवन के चालीस वर्ष एक आदर्श शिक्षक के रूप में व्यतीत किए और भारत के भविष्य को बेहतर बनाने में समर्पित किया। उनके इसी योगदान को याद करते हुए हर साल उनके जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

डॉ. राधाकृष्णन का जन्म 5 सितंबर 1888 को तमिलनाडु के तिरुमनी नामक गांव में हुआ था। वे बचपन से ही किताबें पढ़ने के शौकीन थे और स्वामी विवेकानंद से काफी प्रभावित थे, जिसका प्रभाव उनके दृष्टिकोण में भी देखने को मिलता है। उनका मानना था कि शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी में नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, व्यावसायिक आदि मूल्यों का संचरण करने का प्रयास करना चाहिए। एक शिक्षक के रूप में आदर्श रहे डॉ. सर्वपल्लीराधाकृष्णन को शिक्षक दिवस के अवसर हम सभी नमन करते हैं।

क्रोध, कामवासना और भय ये हमारे शत्रु हैं।

11 सितंबर 1893 में अमेरिका में धर्म संसद का आयोजन हुआ था। भारत की ओर से स्वामी विवेकानंद जी शिकागो में हो रहे धर्म सम्मेलन में शामिल हुए।

स्वामी विवेकानंद जी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा मुझे इस बात का भी गर्व है कि मैं उस देश से हूं जिसने सभी धर्मों के लोगों को शरण दी।

शांति का संदेश देते हुए विवेकानंद जीने ये भी कहा की सांप्रदायिकता, कट्टरता और इसके भयानक वंशजों के धार्मिक हठ ने इस खूबसूरत धरती को जकड़ रखा है और इसे हिंसा से भर दिया है।

शिकागो धर्म संसद

निखिल मिश्रा

एक 25 साल का नौजवान सांसारिक मोह माया छोड़ आध्यात्म और हिंदुत्व के प्रचार प्रसार में जुट गया। संन्यासी बन ईश्वर की खोज में निकले विवेकानंद के जीवन में एक दौर ऐसा आया, जब उन्होंने पूरे विश्व को हिंदुत्व और आध्यात्म का ज्ञान दिया। 11 सितंबर 1893 में अमेरिका में धर्म संसद का आयोजन हुआ था। भारत की ओर से स्वामी विवेकानंद शिकागो में हो रहे धर्म सम्मेलन में शामिल हुए। यहां उन्होंने अपने भाषण की शुरुआत "भाइयों और बहनों" के साथ की। उनके भाषण पर पूरा हॉल तालियों से गूंज उठा। भारत के इतिहास में यह दिन गर्व और सम्मान के साथ याद किया जाता है।

शिकागो में स्वामी विवेकानंद ने अपने भाषण में कहा कि मुझे इस बात का गर्व है कि मैं ऐसे धर्म से हूं जो हमें सभी धर्मों को सच के रूप में स्वीकार करना सिखाता है। तथा मुझे इस बात का भी गर्व है कि मैं उस देश से हूं जिसने सभी धर्मों के लोगों को शरण दी।

अपने भाषण में विवेकानंदजी कहते हैं, 'जिस तरह अलग–अलग जगहों से निकली नदियां, अलग रास्तों से होकर आखिरकार समुद्र में मिलती है। ठीक उसी तरह मनुष्य भी अपनी इच्छा से अलग रास्ते चुनता है। ये रास्ते दिखने में भले ही अलग–अलग लगते हैं लेकिन ये सभी ईश्वर तक ही जाते हैं।'

शांति का संदेश देते हुए विवेकानंद जी ने ये भी कहा की सांप्रदायिकता, कट्टरता और इसके भयानक वंशजों के धार्मिक हठ ने इस खूबसूरत धरती को जकड़ रखा है और इसे हिंसा से भर दिया है।

जाने कितनी बार यह धरती रक्त से लाल हो चुकी है और न जाने कितनी सभ्याताएं तबाह हुई और कितने देश मिटा दिए गए। ये खौफनाक राक्षस न होते तो मानव समाज कहीं बेहतर होता। उनकी कहीं ये बातें आज भी उतनी ही सच है।

अपने को भगवान के लिए अर्पित कर हम दुःख, भय, चिन्ता, शोक और बंधन से मुक्त हो जाएंगे।

पत्तलों से बचेगा पर्यावरण

अगर हम पत्तलों का अधिक उपयोग करेंगे तो गांव के लोगों को रोजगार भी अधिक मिलेगा

डिस्पोजल के कारण जो हमारी मिट्टी में, नदियों में, तलाबों में प्रदूषण फैल रहा है, पत्तलों से अधिक उपयोग से वह कम हो जायेगा।

बहुत छोटी सी बात है, लेकिन हमने उसे विस्मृत कर दिया। हमारी भोजन संस्कृति। इस भोजन संस्कृति में बैठकर खाना और उस भोजन को 'दोने– पत्तल' पर परोसने का बड़ा महत्व था। कोई भी मांगलिक कार्य हो, उस समय भोजन पंक्तियों में बिठाकर कराया जाता था। और वो भोजन पत्तल पर परोसा जाता था। ये पत्तलें विभिन्न प्रकार की वनस्पति के पत्तों से निर्मित होती है।

इसलिए अलग–अलग पत्तलों में गुण भी अलग–अलग होते हैं। कहा जाता है कि लकवा से पीड़ित व्यक्ति को अमलतास के पत्तों से बनी पत्तल पर भोजन करना फायदेमंद होता है। जिन लोगों को जोड़ों में दर्द की समस्या है, उन्हें करंज के पत्तों से बनी पत्तल पर भोजन करना चाहिए। जिनकी मानसिक स्थिति सही नहीं होती है, उन्हें पीपल के पत्तों से बनी पत्तल पर भोजन करना चाहिए। पलाश के पत्तों से बनी पत्तल में भोजन करने से खून साफ होता है और बवासीर के रोग में भी फायदा मिलता है। केले के पत्ते पर भोजन करना तो सबसे शुभ माना जाता है, इसमें बहुत से ऐसे तत्व होते हैं जो हमें अनेक बीमारियों से बचाते हैं। पत्तल में भोजन करने से पर्यावरण भी प्रदूषित नहीं होता, क्योंकि पत्तलें आसानी से नष्ट हो जाती हैं। पत्तलों के नष्ट होने के बाद जो खाद बनती है, वह खेती के लिए बहुत लाभदायक होती है। पत्तलें प्राकृतिक रूप से सर्वथा स्वच्छ होती हैं। इसलिए इन पर भोजन करने से हमारे शरीर को किसी भी प्रकार की हानि नहीं होती है।

अगर हम प्लास्टीक एवं थर्माकोल के स्थान पर पत्तलों का अधिक–से–अधिक उपयोग करेंगे तो शहरों में प्रदूषण की समस्या कम होगी तथा गांव के लोगों को रोजगार भी अधिक मिलेगा, क्योंकि पेड़ सबसे ज्यादा ग्रामीण क्षेत्रों में ही पाये जाते हैं। यदि पत्तलों की मांग बढ़ेगी तो लोग पेड़ भी ज्यादा लगायेंगे, जिससे प्रदूषण को कम करने में सहायता मिलेगी। डिस्पोजल के कारण जो हमारी मिट्टी में, नदियों में, तलाबों में प्रदूषण फैल रहा है, पत्तलों से अधिक उपयोग से वह कम हो जायेगा। जो मासूम बेजुबान जानवर प्लास्टिक खाने से बीमार हो जाते हैं या मर जाते हैं वे भी सुरक्षित रहेंगे। सबसे बड़ी बात पत्तलें, डिस्पोजल से बहुत सस्ती होती हैं। ये बदलाव आप और हम ही ला सकते हैं।

– ***सेवा समर्पण***

परिवर्तन संसार का नियम है। यहां सब बदलता रहता है।

समाज को अंत्योदय का विचार देने वाले पंडित दीनदयाल उपाध्याय

डॉ. शब्द प्रकाश

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी एक महान विचारक और राजनेता थे। भारतीय जनता पार्टी की पूर्ववर्ती पार्टी भारतीय जनसंघ को खड़ा करने में इनका अहम योगदान रहा। छोटी उम्र से ही संघर्षो भरा जीवन जीने वाले दीनदयाल उपाध्याय जी समाज के लिए एक मिसाल हैं। उन्होंने प्रांतीय सेवा परीक्षा को पास कर लिया था और सरकारी नौकरी भी लग गई थी। लेकिन उन्होंने समाज एवं राष्ट्र की सेवा के लिए अपनी नौकरी को छोड़ने का निर्णय लिया।

भारतीय जनसंघ में रही अहम भूमिका

1951 में भारतीय जनसंघ की नींव रखी गई थी और इस पार्टी को खड़ा करने का कार्य उन्होंने श्यामा प्रसाद मुखर्जी के साथ मिलकर किया था। वहीं साल 1980 में इस पार्टी का नाम भारतीय जनता पार्टी हो गया।

पत्रकार के रूप में उपाध्याय जी

श्री भाऊरावदेवरस जी की प्रेरणा से दीनदयाल उपाध्याय जी ने 1947 में राष्ट्रधर्म प्रकाशन की स्थापना की। लखनऊ से पांचजन्य पत्रिका और दैनिक स्वदेश अखबार का प्रकाशन प्रारंभ किया। इसके अलावा उन्होंने चंद्रगुप्त मौर्य पर एक नाटक और शंकरचार्य के जीवन पर एक किताब भी लिखी थी।

संघ के प्रचारक

सन 1937 में दीनदयाल जी का श्री बलवंत महाशब्दे जी से संपर्क हुआ और उन्ही के माध्यम से वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में शामिल हो गए। उनके साथ उनके एक सहपाठी सुंदर सिंह भंडारी भी संघ में शामिल हुए। सन 1942 में वह श्री भाऊरावदेवरस जी से मिले और अपने जीवन को पूर्णकालिक संघ सेवा के लिए समर्पित कर दिया।

एकात्म मानववाद एवं अंत्योदय

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने एकात्म मानववाद एवं अंत्योदय नामक दो दर्शनों का सूत्रपात किया। एकात्म मानववाद के अनुसार हमारी संपूर्ण व्यवस्था का केंद्र मानव होना चाहिए जो 'यतपिंडेततब्रह्मांडे' पर आधारित है। भौतिक उपकरण मानव के सुख के साधन है साध्य नहीं। अंत्योदय का मतलब हैं, हम जो भी नियम बनाए तो यह सोच कर बनाएं की इसका लाभ पंक्ति के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति को मिल रहा है की नहीं।

दीनदयाल उपाध्याय का निधन

10 फरवरी, 1968 को दीनदयाल जी अपनी पार्टी से जुड़े कार्य के लिए लखनऊ से पटना जाने के लिए रेल गाड़ी से रवाना हुए थे और इसी दौरान उनकी हत्या कर दी गई थी। उनका शव अगले दिन रहस्यमय परिस्थितियों में मुगलसराय रेलवे स्टेशन (वर्तमान नाम पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्टेशन) के पास मिला था। उनकी हत्या किसने की थी इस बात का पता आज तक नहीं चल पाया है।

क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।। *(द्वितीय अध्याय, श्लोक 63)*

हिंदी अनुवाद : क्रोध से मनुष्य की मति मारी जाती है यानी मूढ़ हो जाती है जिससे स्मृति भ्रमित हो जाती है। स्मृति–भ्रम हो जाने से मनुष्य की बुद्धि नष्ट हो जाती है और बुद्धि का नाश हो जाने पर मनुष्य खुद का अपना ही नाश कर बैठता है।

सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय, मान-अपमान में एक भाव में स्थित रह जीवन का आनंद ले।

दिल्ली का प्राचीन गांव शाहपुर जाट

नरेन्द्र कुमार वर्मा

वर्षों पहले इंद्री गांव से एक डागर कबीला अपने परिवार के साथ दिल्ली आया था। जिसने शाहपुर जाट गांव की नींव रखी थी।

दिल्ली के शाहपुर जाट गांव का इतिहास हजारों साल पुराना है। दिल्ली के इस प्राचीन गांव की नींव हरियाणा के प्रसिद्ध इंद्री गांव से जुड़ी है। वर्षों पहले इंद्री गांव से एक डागर कबीला अपने परिवार के साथ दिल्ली आया था। जिसने इस गांव की नींव रखी थी। शाहपुर दो शब्दों से मिलकर बना है। जिसमें शाह का वास्तविक अर्थ धन होता है और पुर का अर्थ है वह स्थान जहां बहुत से धनवान रहते हैं। दिल्ली के इस गांव में कभी बड़ी–बड़ी हवेलियां हुआ करती थीं। बहुत सी पुरानी ईमारतों के खंड़हर आज भी इस गांव में मौजूद हैं। यहां कभी बारादरी वाली भव्य इमारत हुआ करती थी मगर आज केवल उसके अवशेष ही यहां दिखाई देते हैं। दिल्ली पर शासन करने वाले तोमर जाट वंश के राजाओं ने 11 वीं शताब्दी में यहां एक किले का निर्माण कराया था। जिसके खंड़हर आज भी यहां चारों तरफ फैले हुए है।

शाहपुर जाट गांव को दिल्ली में पंवार और तंवरखाप के जाटों का सबसे बड़ा गांव माना जाता है। इस गांव की संस्कृति और बोलचाल की कभी अपनी अलग पहचान हुआ करती थी। गांव में आज भी एक पुरानी बड़ी चौपाल मौजूद है। मगर तपा, पंचगामा, बारह, सत्रह, अठाईस, छियानवे और तपें जैसी शाहपुर की पुरानी पंचायतों का अस्तित्व अब नहीं है। मगर गांव के कुछ युवा इन पंचायतों को पुर्नजीवित करने का प्रयास कर रहे हैं। दिल्ली में जितने भी उपनगरी इलाके बसे हैं वहां तक इस गांव के जमींदारों की जमीनें थी। गुलमोहर पॉर्क, पंचशील, खेल गांव, एंड्रूजगंज और मालवीय नगर जैसे दिल्ली के पॉश इलाके इसी गांव की जमीनों पर विकसित हुए हैं। शाहपुर जाट गांव के चारों तरफ कभी हरे–भरे खेत हुआ करते थे। 70 के दशक तक इस गांव के चारों तरफ सरसों के हरे भरे खेत लहराया करते थे। इस गांव में पैदा हुई फूलगोभी की दिल्ली में बहुत मांग थी। यह गांव कभी पशुपालन और दूध उत्पादन

गुलमोहर पॉर्क, पंचशील, खेल गांव, एंड्रूजगंज और मालवीय नगर जैसे दिल्ली के पॉश इलाके शाहपुर जाट गांव की जमीनों पर विकसित हुए है।

आज शाहपुर जाट की दिल्ली ही नहीं बल्कि सारी दुनिया में फैशन हब के रूप में अलग पहचान है।

हमें अपने देखने के नजरिए को शुद्ध करना होगा।

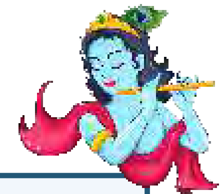

के लिए भी जाना जाता था। आज इस गांव में हिंदू समाज की 36 बिरादरियां निवास करती हैं।

1982 में जब दिल्ली में एशियाई खेलों का आयोजन हुआ तो इस गांव की अधिकांश जमीन पर खेल गांव का निर्माण कर दिया गया। जिसके बाद यहां के लोगों ने कारोबार और नौकरियों में हाथ आजमाना शुरू किया। आज शाहपुर जाट की दिल्ली ही नहीं बल्कि सारी दुनिया में फैशन हब के रूप में अलग पहचान है। पुरातत्व महत्व और फैशन डिजाइनिंग के लिए यह गांव दुनिया के नक्शे पर अपनी जगह बना चुका है। दुनियाभर के फैशन डिजाइनर इस गांव की गलियों में घूमते हुए देखे जा सकते हैं। शाहपुर जाट गांव में शंकर भगवान का एक प्राचीन मंदिर भी है। यह मंदिर गांव वालों की आस्था का बड़ा केंद्र है। गांव में होने वाले मंगल कार्यों एवं तीज त्योहारों पर इस मंदिर में सबसे पहले पूजा की जाती है।

गीता के कुछ प्रेरक श्लोक

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।

(द्वितीय अध्याय, श्लोक 47)

हिंदी अनुवाद : कर्म पर ही तुम्हारा अधिकार है, लेकिन कर्म के फलों में कभी नहीं। इसलिए कर्म को फल के लिए मत करो और न ही काम करने में तुम्हारी आसक्ति हो।

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते।।

(द्वितीय अध्याय, श्लोक 62)

अर्थ : विषय–वस्तुओं के बारे में सोचते रहने से मनुष्य को उनसे आसक्ति हो जाती है। इससे उनमें कामना यानी इच्छा पैदा होती है और कामनाओं में विघ्न आने से क्रोध की उत्पत्ति होती है।

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनरू।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।

(तृतीय अध्याय, श्लोक 21)

हिंदी अनुवाद : श्रेष्ठ पुरुष जो–जो आचरण यानी जो–जो काम करते हैं, दूसरे मनुष्य (आम इंसान) भी वैसा ही आचरण, वैसा ही काम करते हैं। वह (श्रेष्ठ पुरुष) जो प्रमाण या उदाहरण प्रस्तुत करता है, समस्त मानव–समुदाय उसी का अनुसरण करने लग जाते हैं।

डॉक्टर को अब जेनरिक दवा ही लिखनी होगी

चिकित्सा खर्च कम करने के लिए राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग ने एक बड़ा फैसला लिया है। आयोग ने साफ कहा है कि जो चिकित्सक जेनरिक दवा नहीं लिखेंगे। उनका लाइसेंस एक सीमित अवधि के लिए निलंबित कर दिया जाएगा। जारी अधिसूचना में यह कहा गया है कि भारत में दवाओं पर सबसे ज्यादा खर्च हो रहा है। यह स्वास्थ्य देखभाल का एक बहुत बड़ा हिस्सा है। ब्रांडेड दवाइयां बहुत ही महंगी होती है। वहीं जेनरिक दवाएं 80 फीसदी तक सस्ती होती हैं। इससे लोगों का स्वास्थ्य खर्च बहुत कम हो जाएगा और आमजन को राहत भी मिलेगी।

जेनरिक दवा पेटेंट से बाहर हो चुकी दवा होती है। यह दवा कंपनियों द्वारा ही निर्मित की जाती है। कई बार तो वही दवा कंपनी बांडेड और जेनरिक दोनों ही बनाती हैं। इन दवाओं का पेटेंट नहीं होता है तो इनकी लागत काफी कम हो जाती है। इसके कारण यह काफी सस्ती दर पर लोगों को उपलब्ध हो जाती हैं।

30-80%

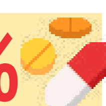

तक ब्रांडेड दवाओं से सस्ती

एनएमसी की ओर से 2 अगस्त को अधिसूचित नियमों में कहा गया कि भारत में दवा पर अपनी जेब से किया जाने वाला खर्च सार्वजनिक खर्च का एक बड़ा हिस्सा है। जेनेरिक दवाएं ब्रांडेड से 30 से 80 फीसदी तक सस्ती पड़ती है।

अशांत मन को शांत करने का अभ्यास करें अन्यथा अनियंत्रित मन हमारा शत्रु बन जाएगा।

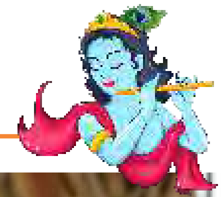

गरीब छात्रों के लिए वरदान है नि:शुल्क कोचिंग योजना

भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय ने अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, दिव्यांग एवं पिछड़ा वर्ग के छात्रों के लिए मुफ्त कोचिंग योजना की शुरुआत की है।

नि:शुल्क कोचिंग योजना के माध्यम से आप जेईई, आईआईटी, नीट, केट, कैलेट, यूपीएससी, एसएससी, आरआरबी, बैंकिंग, बीमा और अन्य क्षेत्रों की सरकारी सेवाओं की प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी कर सकते हैं।

https://coaching.dosje.gov.in/ पर जाकर आवेदन कर सकते हैं।

अगर पैसों की कमी के कारण सरकारी सेवा की परीक्षाओं की तैयारी नहीं कर पा रहे है। तो आपको निराश होने की जरूरत नहीं है। यह आलेख आपके लिए ही हैं। भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय ने अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, दिव्यांग एवं पिछड़ा वर्ग के छात्रों के लिए मुफ्त कोचिंग योजना की शुरूआत की है। नि:शुल्क कोचिंग योजना के माध्यम से आप जेईई, आईआईटी, नीट, केट, कैलेट, यूपीएससी, एसएससी, आरआरबी, बैंकिंग, बीमा और अन्य क्षेत्रों की सरकारी सेवाओं की प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी कर सकते हैं।

इस योजना का लाभ लेने वाले छात्रों के परिवार की वार्षिक आय 8 लाख रुपया से कम होनी चाहिए। मुफ्त कोचिंग योजना का लाभ लेने वाले छात्रों को 3 हजार रुपये मासिक छात्रवृति भी प्रदान किया जाएगा ताकि उन्हें कोचिंग तक आने–जाने में असुविधा न हो। इस योजना का लाभ लेने के लिए आप https:coaching.dosje.gov.in पर जाकर आवेदन कर सकते हैं। इस योजना में चयनित होने वाले छात्रों का चयन मेरिट सूची के अनुसार किया जाता है। मेरिट सूची के उपरांत चयनित छात्रों को साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है।

केवल अनुसूचित जाति, जनजाति, दिव्यांग एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्र ही इस योजना के लिए आवेदन कर सकते हैं। मुफ्त कोचिंग योजना की विशेष बात यह है कि छात्रों को यह सुविधा प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा दोनों के लिए ही प्रदान की जाती है। योजना में चयनित हुए छात्रों को जाने–माने कोचिंग संस्थानों में प्रवेश मिलता है। अगर आप प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारियां कर रहे हैं और आपके पास कोचिंग में जाकर पढ़ने के लिए पैसा नहीं है तो आप भारत सरकार के पोर्टल पर जाकर आवेदन कर सकते हैं। पोर्टल का विवरण इस आलेख में हम आपको दे रहे हैं।

मुफ्त कोचिंग योजना में आवेदनकर्ता के लिए जरूरी दस्तावेज

1. आधार कॉर्ड
2. निवास प्रमाण–पत्र
3. मोबाइल नंबर
4. ईमेल आईडी
5. पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ
6. शिक्षा के प्रमाण–पत्र
7. आय का प्रमाण–पत्र

मेरा-तेरा, छोटा-बड़ा, अपना-पराया, मन से मिटा दो, फिर सब तुम्हारा है, तुम सबके हो।

बहनों के लिए ब्यूटीपार्लर प्रशिक्षण

- ब्यूटीपार्लर के विभिन्न कोर्स का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद बहनें अपने घर पर ब्यूटीपार्लर का काम शुरु कर सकती हैं।
- ब्यूटीपार्लर का काम ऐसा हैं कि आप एक प्रोफेशनल किट लेकर इस काम को अपने घर से ही शुरु कर सकती हैं।
- कृपया पंजीकरण के लिए यहां दिए मोबाइल नंबर पर संपर्क करें - 8595887700

बहनें अगर घर पर रोजगार करने की सोच रही हैं तो समर्थ भारत से ब्यूटीपार्लर के विभिन्न कोर्स का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद अपने घर पर ब्यूटीपार्लर का काम शुरु कर सकती हैं। ब्यूटीपार्लर का काम ऐसा है कि आप एक प्रोफेशनल किट लेकर इस काम को अपने घर से ही शुरू कर सकती हैं। समर्थ भारत द्वारा दिल्ली के कई स्थानों पर ब्यूटीपार्लर प्रशिक्षण केंद्रों का संचालन किया जा रहा है। प्रशिक्षण के उपरांत आपको भारत सरकार के खादी विकास एवं ग्रामोद्योग आयोग की तरफ से एक प्रमाण–पत्र भी प्रदान किया जाएगा। इस कोर्स में आपको ब्लीचिंग, वैक्सिंग, मैनीक्योर, पेडीक्योर, फेशियल, मालिश, हेयरसेटिंग्स, मेंहदी, रिबॉन्डिंग, स्मूथनिंग, स्पा, ट्रेटनिंग, पार्टी मेकअप, क्रिम्पिंगकर्लिंग, नेलआर्टस्, साड़ी ड्रेपिंग, दुपट्टा सेटिंग, ब्राइडल मेकअप और पर्सनालिटी डेवलपमेंट जैसे 38 कोर्स का प्रशिक्षण समर्थ भारत के केंद्रों पर दिया जाता है।

समर्थ भारत द्वारा ब्यूटीपार्लर प्रशिक्षण के लिए आपका 10 वीं अथवा 8 वीं पास होना जरूरी है।

3 महीने के इस प्रशिक्षण का शुल्क केवल 944 रुपये है। अगर कुछ बहनें प्रशिक्षण शुल्क देने में असमर्थ रहती हैं तो उनके प्रशिक्षण के लिए किसी संस्था द्वारा शुल्क अदा करने की व्यवस्था भी कराई जाती है।

समर्थ भारत प्रशिक्षण केंद्रों का विवरण:

1. एफ–54, मधुविहार, अपॉजिट सरस्वती अपार्टमेंट मेन गेट, दिल्ली–92
2. 5, प्रेमनगर मार्केट, 3 फ्लोर, त्यागराज स्टेडियम गेट नंबर 1 के सामने, दिल्ली–110003
3. आरजेड बी– 44–45, रोशन विहार, गली नंबर–4 नजफगढ़, दिल्ली–110043
4. माता चौक, गांव कंगाहेडी, पोस्ट छावला, दिल्ली – 110071
5. ए–43, संडे मार्केट, टीप्वाइंटमंशारामपॉर्क, उत्तम नगर, दिल्ली– 59
6. 418–जीएच–6, प्राचीन अपार्टमेंट, पश्चिम विहार, दिल्ली–110087
7. टेंकरोडकम्युनिटी सेंटर, 3 फ्लोर, सेवा भारती सेंटर, करोल बाग, दिल्ली–110005
8. 3180, एसडी बांकेबिहारी स्कूल, पहाड़गंज, दिल्ली–110055

सभी के प्रति समता का भाव, सभी कर्मों में कुशलता और दुःख रूपी संसार से वियोग का नाम योग है।

दैनिक आहार में फाइबर है जरूरी

फाइबर युक्त खाने के लाभ

- *पाचन तंत्र के लिए फायदेमंद*
- *पाचन प्रक्रिया को बेहतर बनाने में सहायक*
- *कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित करने में सहायक*
- *ब्लड में शुगर के लेवल को कंट्रोल करने में सहायक*
- *हृदय, कैंसर आदि रोगों से बचाने में सहयोगी*

अगर आपको पाचन संबंधी समस्या है, कोलेस्ट्रॉल का स्तर बिगड़ा हुआ है या फिर वजन कम करना चाहते हैं, तो इसके लिए उपयोगी विकल्प है फाइबर युक्त खाना। आहार में रेशे युक्त पदार्थों को शामिल करना बहुत महत्वपूर्ण हैं। इससे जीवन शैली से संबंधित कई बीमारियों से भी बचाव होगा। फाइबर यानि रेशेदार पदार्थ शरीर के लिए कई तरह से लाभकारी होते हैं। फाइबर युक्त खाना हमें शाकाहारी खाने से मिलते हैं। ये आंत में पानी को सोखते हैं और कई तरह के रोगों से हमारी रक्षा करते हैं। फाइबर युक्त खाद्य पदार्थों के सेवन से कई स्वास्थ्य लाभ होते हैं। जैसे अधिक फाइबर युक्त खाना खाने से बड़ी आंत से भोजन जल्दी आगे चला जाता है और पाचन प्रक्रिया सही रहती है।

फाइबर युक्त वाले खाद्य पदार्थ

अलसी, बादाम, अनार, सूखा अंजीर, गेहूं का चोकर, बाजरा, राई का आटा, राजमा, दाल, गाजर और चुकंदर में प्रचुर मात्रा में फाइबर होता है। इसे अपने दैनिक आहार में शामिल करें। फाइबर की मात्रा अपने आहार में बढ़ाने से पहले यह ध्यान रखना चाहिए कि शरीर में पानी की कमी न हो। फाइबर पानी को खींचता है, जिससे शरीर में पानी की कमी हो सकती है। इसलिए रेशेयुक्त भोजन का सेवन करने के साथ ही पानी की मात्रा बढ़ाना आवश्यक होता है।

क्या है फाइबर

फाइबर कार्बोहाइड्रेट का एक ऐसा प्रकार है, जो प्रायः पौधों की पत्तियों, तने और जड़ों में पाया जाता है। इसके अलावा चोकर, साबुत अनाजों और बीस प्रजाति की सब्जियों में भी फाइबर मौजूद होता है। मूलतः फाइबर दो प्रकार के होते हैं, जो शरीर के लिए अलग तरह से काम करते हैं। पहले तरह का अघुलनशील फाइबर चोकर, मूंगफली, सूखे मेवों और पत्तेदार हरी सब्जियों में पाया जाता है। इसकी बनावट मोटी और खुरदरी होती, इसलिए यह पानी में नहीं घुल पाता और पाचन क्रिया के अंत तक साबुत रहता है। यह उत्सर्जन प्रक्रिया द्वारा शरीर से बाहर निकल जाता। वहीं घुलनशील फाइबर कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को कम करता है। हृदय रोग से बचाव करता है और रक्त में शर्करा की मात्रा को भी नियंत्रित रखता है। दलिया, जौ, मटर, सेम, मसूर, बीज, नींबू के फल और सेब में घुलनशील फाइबर पाया जाता है।

बच्चे को खाने में 15-30 ग्राम हर दिन हो फाइबर

बच्चे को लगभग 15-30 ग्राम हर दिन फाइबर युक्त खाना मिले। अपने आहार में साबुत अनाज को शामिल किया जाय। सुबह के नाश्ते में फाइबर युक्त पादर्थ लें। इससे आपका पांचन बेहतर बनेगा।

जीवन न तो भविष्य में है, न अतीत में है, जीवन तो बस इस पल में है।

दिल्ली में 'भारत मंडपम' राष्ट्र को समर्पित

दिल्ली के प्रगति मैदान में अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी–सह – सम्मेलन केंद्र भारत मंडपम को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्र को समर्पित किया। देश में होने वाली वैश्विक बैठकों, सम्मेलनों और प्रदर्शनियों के आयोजन के लिए अब प्रगति मैदान में विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे को विकसित किया गया है। प्रधानमंत्री ने नए अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी–सह–सम्मेलन केंद्र को भारत मंडपम का नाम दिया है। विश्व स्तर के बड़े आयोजनों अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों, व्यापार मेलों, सम्मेलनों, सेमिनारों और अन्य प्रतिष्ठित कार्यक्रमों की मेजबानी के लिए नया प्रगति मैदान तैयार है। यहां बने मीटिंग रूम, लाउंज, ऑडिटोरियम, एम्फीथिएटर और बिजनेस सेंटर विश्व स्तर की सुविधाओं से सुसज्जित है।

123 एकड़ का हराभरा परिसर

प्रगति मैदान का नया स्वरुप लगभग 123 एकड़ के क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां बने सभी कॉम्प्लेक्स अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन और प्रदर्शनियां के लिए तैयार किया गया है। दुबई, संघाई, लंदन, सिडनी और न्यूयार्क के बाद प्रगति मैदान का भारत मंडपम कॉम्प्लेक्स दुनिया के शीर्ष प्रदर्शनी और सम्मेलन स्थलों में शामिल हो गया है।

उपलब्ध सुविधाएं

नए प्रगति मैदान में कन्वेंशन सेंटर, प्रदर्शनी हॉल, एम्फीथिएटर की अत्याधुनिक सुविधाओं को विकसित किया गया है। इसके बेजोड़ एम्फीथिएटर एक साथ 3,000 व्यक्तियों की बैठने की क्षमता है। विशेष बात यह हैं कि मुख्य इमारत को शंख के आकार में डिजाइन किया गया है। जिसकी दीवारों और आगे के हिस्से में भारत की पारंपरिक कला और संस्कृति के दृश्यों को शामिल किया गया है।

5 जी सक्षम प्रणाली युक्त वाई–फाई

यहां बने सभी हॉल एवं सम्मेलन कक्ष में 5जी प्रणाली से सक्षम वाई–फाई सुविधा को तैयार किया गया है। कार्यक्रम के समय 16 विभिन्न भाषाओं में अनुवादक की सुविधा के लिए एक कक्ष भी बनाया गया है। नए प्रगति मैदान का संपूर्ण परिसर ग्रीन ऊर्जा और केंद्रीकृत वातानुकूल प्रणाली से तैयार किया गया है।

सात नए प्रदर्शनी हॉल

नए प्रगति मैदान कॉम्प्लेक्स में कुल सात प्रदर्शनी हॉल हैं। जहां प्रदर्शनियों,

जन्म लेने वाले के लिए मृत्यु उतनी ही निश्चित है, जितना कि मरने वाले के लिए जन्म लेना।

व्यापार मेलों और व्यावसायिक कार्यक्रमों का भव्य आयोजन किया जाएगा। सभी हाल वास्तुकला एवं डिजाइन के दृष्टिकोण से आधुनिक इंजीनियरिंग और वास्तुशिल्प का सुंदर उदारहण है।

वास्तुशिल्प डिजाइन में भारतीय परंपराओं की झलक

नए भारत मंडपम भवन का वास्तुशिल्प डिजाइन भारतीय परंपराओं से प्रेरित है। इस इमारत को शंख के आकार में निर्मित किया गया है। जिसकी दीवारें और अग्रभाग भारत की पारंपरिक कला और संस्कृति को दर्शाते हैं। जिनमें 'सूर्य शक्ति', सौर ऊर्जा, जीरो टू इसरो, अंतरिक्ष में भारत की उपलब्धियां, पंच महाभूत–आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी आदि को दर्शाया गया है। इसके अलावा देश के विभिन्न क्षेत्रों की पेंटिंग और जनजातीय कला भी कन्वेंशन सेंटर की शोभा बढ़ा रहे हैं।

संगीतमय फुव्वारे, झीलें एवं तालाब की सुंदरता

प्रगति मैदान कॉम्प्लेक्स के बाहर और भीतर के क्षेत्र में भी सुंदरता और प्राकृतिक हरियाली का भी पूरा ध्यान रखा गया है। भारतीयता का प्रदर्शन करने वाली मूर्तियां, भित्ति चित्र और भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के चिन्हों को जगह–जगह पर प्रदर्शित किया गया हैं। अब यहां संगीतमय फव्वारे तालाब, झीलें और कृत्रिम जल की धाराएं सभी का मन मोह रही है। जिससे सारे परिसर का सौंदर्य और सुंदरता बहुत बढ़ गई है।

अत्याधुनिक पार्किंग व्यवस्था

नए प्रगति मैदान में 5,500 से अधिक वाहनों की पार्किंग की व्यवस्था है। पार्किंग की विशेष बात यह है कि किसी भी अतिथि को अपना वाहन पॉर्क करने के बाद सीधे हॉल में प्रवेश मिल जाता है। यहां बनी अत्याधुनिक पार्किंग के बाद अब सड़क पर जाम की स्थिति नहीं होगी।

आपका सहकार

इन्द्रप्रस्थ विश्व संवाद केंद्र न्यास के माध्यम से समाज निर्माण का कार्य किया जा रहा है। समाज का कोई भी कार्य समाज की सज्जन शक्ति की सहायता के बिना संभव नहीं है। हमें भी समाज की सज्जन शक्ति से सहायता एवं सहयोग की अपेक्षा है।

समाज एवं राष्ट्र निर्माण के लिए हमें दी गई सहायता राशि पर

आप आयकर अधिनियम 1961 की धारा

80 जी के तहत कर छूट ले सकेंगे।

PAN : AAATI6126P

Unique Registration Number : AAATI6126PF20221

बैंक एकाउंट विवरण

Name : INDRAPRASTHA VISHWA SAMVAD KENDRA NYAS

BANK : BANK OF BARODA | A/C NO. (SAVING) : 71270100014227 | IFSC : BARB0DBALIP

BRANCH : ALIPORE ROAD, NEW DELHI BRANCH, DELHI - 110054

मैं सभी प्राणियों को एकसमान रूप से देखता हूं, मेरे लिए ना कोई कम प्रिय है ना ही ज्यादा।

अनुपयोगी सामानो से बने पॉर्क में दिखाई देगा भारत का इतिहास

दिल्ली में आईटीओ के पास स्थित शहीद पॉर्क को कबाड़ से बनी कलाकृतियों से सजाया गया है। सवा चार एकड़ में फैले इस पॉर्क में भारत माता की मूर्ति को अनुपयोगी सामानों से बनाया गया है। लोहे के कबाड़ से ही स्वतंत्रता संग्राम में बड़ी भूमिका निभाने वाले सेनानियों के बारे में विवरण दर्शाया गया है। इस पॉर्क को दिल्ली नगर निगम ने तैयार किया है जिसके निर्माण में 200 टन के करीब लोहे के कबाड़ का प्रयोग किया गया है। लोहे के कबाड़ से ही मूर्तियों, पेड़ों के डिजाइन और कलाकृतियों को बनाया गया है। आप जब इस पॉर्क में जाएंगे तो हरियाली के बीच कबाड़ से बनी कलाकृतियों को देखकर आपको

आश्चर्य होगा कि जिस अनुपयोगी समानों को हम बेकार समझ कर फेंक देते है उसका इतना सुंदर प्रयोग किया जा सकता है। आजादी के अमृत काल में दिल्ली में बना यह पॉर्क दिल्ली वासियों के घूमने के लिए एक अच्छा स्थान साबित होगी।

ढाई हजार लोगों की रक्षा कवच बनी अधिकारी

दिल्ली के नजदीक हरियाणा के नंहू जिले में विधर्मियों ने जिस तरह से ब्रजमंड़ल यात्रा पर हमला किया उससे ढाई हजार से ज्यादा हिन्दू श्रद्धालुओं की जान पर बन आई। ब्रजमंडल यात्रा जैसे ही नलहड़ के प्राचीन शिव मंदिर पर पहुंची तो हजारों विधर्मियों की भीड़ ने मंदिर पर हमला कर दिया। मंदिर प्रांगण में उस समय ढाई हजार से ज्यादा श्रद्धालु थे जिनमें महिलाएं, बुजुर्ग, बच्चे और युवा सभी शामिल थे।

चारों तरफ से गोलियां चल रही थीं मंदिर के आसपास के पहाड़ी इलाके से पत्थर और गोलियां सीधे मंदिर की तरफ चलाई जा रही थीं। चारों तरफ से विधर्मियों के नारे गूंज रहे थे और नलहड़ शिव मंदिर से बाहर निकलने के लिए श्रद्धालुओं को कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। ब्रजमंड़ल यात्रा के आयोजकों ने किसी तरह पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों को सारी जानकारी दी। शाम करीब 4 बजे हरियाणा की एडीजीपीलॉ एंड ऑर्डर ममता सिंह अपने साथ पुलिस की एक टीम लेकर मंदिर पहुंची। उनके सामने भी दंगाइयों की पत्थरबाजी जारी थी और फायरिंग हो रही थी। तभी ममता सिंह ने पुलिस की एक टुकड़ी को फायरिंग करने वालों पर जवाबी कार्यवाही करने का आदेश दिया। वह पुलिस की एक दूसरी टुकड़ी के साथ मंदिर में डरे सहमें बैठे श्रद्धालुओं को बाहर निकालने में जुट गईं। पुलिस की गाड़ियों में बैठा कर सभी को सुरक्षित बाहर निकाला गया। ढाई हजार से ज्यादा लोगों को वहां से निकालने में पुलिस को दो घंटे से ज्यादा का समय लगा। मंदिर में फंसे श्रद्धालुओं का कहना था कि अगर ममता सिंह नहीं आती तो मंदिर के प्रांगण में भारी रक्तपात हो सकता था क्योंकि विधर्मियों को पुलिस और प्रशासन का कोई डर नहीं था।

मनुष्य अपने विश्वास से निर्मित होता है, जैसा वह विश्वास करता है, वैसा वह बन जाता है।

पारंपरिक कारीगरों व शिल्पकारों के लिए

पीएम विश्वकर्मा योजना

केंद्र सरकार ने पांच साल की अवधि के लिए 13,000 करोड़ रुपये की नई योजना "पीएम विश्वकर्मा" को मंजूरी दी।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 15 अगस्त को लाल किला की प्राचीर से विश्वकर्मा योजना की घोषणा की थी।

पीएम विश्वकर्मा के तहत पहले चरण में अठारह पारंपरिक व्यवसायों को शामिल किया जाएगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 15 अगस्त को लाल किला की प्राचीर से राष्ट्र को संबोधित करते हुए विश्वकर्मा योजना की घोषणा की थी। 16 अगस्त 2023 को प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में हुई आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति ने पांच साल की अवधि (वित्त वर्ष 2023–24 से वित्त वर्ष 2027–28) के लिए 13,000 करोड़ रुपये की नई योजना "पीएम विश्वकर्मा" को मंजूरी दी। इस योजना का उद्देश्य गुरु–शिष्य परंपरा या अपने हाथों और औजारों से काम करने वाले कारीगरों व शिल्पकारों द्वारा पारंपरिक कौशल के परिवार–आधारित पेशे को मजबूत करना और बढ़ावा देना है। इस योजना का उद्देश्य कारीगरों और शिल्पकारों के उत्पादों व सेवाओं की पहुंच के साथ–साथ गुणवत्ता में सुधार करने के साथ–साथ यह सुनिश्चित करना है कि विश्वकर्मा घरेलू और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं के साथ जुड़ सकें।

पीएम विश्वकर्मा योजना के तहत, कारीगरों और शिल्पकारों को पीएम विश्वकर्मा प्रमाणपत्र और पहचानपत्र के माध्यम से मान्यता प्रदान की जाएगी, 5 प्रतिशत की रियायती ब्याज दर के साथ 1 लाख रुपये (पहली किश्त) और 2 लाख रुपये (दूसरी किश्त) तक ऋण सहायता प्रदान की जाएगी। इस योजना के तहत बाद में कौशल उन्नयन, टूलकिट प्रोत्साहन, डिजिटल लेन–देन के लिए प्रोत्साहन और विपणन सहायता प्रदान की जाएगी।

यह योजना पूरे भारत में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के कारीगरों व शिल्पकारों को सहायता प्रदान करेगी।

पीएम विश्वकर्मा के तहत पहले चरण में अठारह पारंपरिक व्यवसायों को शामिल किया जाएगा। इन व्यवसायों में (1.) बढ़ई (सुथार); (2) नाव निर्माता; (3) अस्त्र बनाने वाला; (4) लोहार (5) हथौड़ा और टूल किट निर्माता; (6) ताला बनाने वाला; (7) गोल्डस्मिथ (सुनार); (8) कुम्हार; (9) मूर्तिकार (पत्थर तराशने वाला, पत्थर तोड़ने वाला); (10) मोची (चर्मकार)/जूता कारीगर; (11) मेसन (राजमिस्त्री); (12) टोकरी/चटाई/झाड़ू निर्माता/जूट बुनकर; (13) गुड़िया और खिलौना निर्माता (पारंपरिक); (14) नाई; (15) माला बनाने वाला; (16) धोबी; (17) दर्जी और (18) मछली पकड़ने का जाल बनाने वाला शामिल हैं।

फल की अभिलाषा छोड़कर कर्म करने वाला पुरुष ही अपने जीवन को सफल बनाता है।

कालकाजी मंदिर
में अब सिर्फ पंचमेवा का लगेगा भोग

मीडिया में प्रकाशित समाचार के अनुसार दिल्ली के कालकाजी मंदिर में चढ़ने वाले प्रसाद में बदलाव हुआ है। अब कालकाजी मंदिर में खुला प्रसाद जैसे सूखा नारियल, पेड़ा, लड्डू जैसे प्रसाद को चढ़ाने की मनाही है। मंदिर परिसर की दुकानों में सिर्फ पैकेट बंद प्रसाद ही बेचे जा सकेंगे। माँ के भोग के लिए अब कालकाजी मंदिर में श्रद्धालु सिर्फ पंचमेवा प्रसाद ही चढ़ा पाएंगे, जो पैकेट बंद होगा जिसमें काजू, किसमिस, नारियल, बादाम होगा जिसकी कीमत 20 रुपये से लेकर 100 रुपये तक होगी।

प्राचीन शक्तिपीठों में से एक दिल्ली का कालकाजी मंदिर है, जिसमें हजारों श्रद्धालु माता के दर्शन के लिए रोजाना मंदिर पहुंचते हैं और अपनी मनोकामना की पूर्ति हेतु मां से आशीर्वाद मांगते हैं। वहीं कालकाजी मंदिर के विकास और मंदिर को भव्य और सुगम बनाने के लिए सेवानिवृत जज को प्रशासक के रूप में नियुक्ति की गई है।

तेजपत्ते का सेवन
शुगर को रखता है नियंत्रण में

चाहे घर में कोई सब्जी बन रही हो या फिर पुलाव दोनों में ही तेज पत्तो का प्रयोग खूब किया जाता है। इससे खाने का स्वाद तो बढ़ता ही है साथ ही स्वस्थ्य के दृष्टि से भी बहुत लाभदायक है। आइए तेजपत्ता के गुणों के बारे में जानते हैं।

- तेजपत्ता में विटामिन–ए और विटामिन–सी पाया जाता है। ये दोनों ही विटामिन हमें अपनी दैनिक जीवन में चाहिए होते हैं। क्योंकि विटामिन–ए हमारी आंखों की समस्या को दूर करने का काम करता है और विटामिन –सी हमारे शरीर में वाइट ब्लड सेल्स की संख्या बनाएं रखने में मदद करता है।
- अगर आपको पाचन से जुड़ी समस्याएं हैं तो आप तेजपत्ते का उपयोग कर सकते हैं।
- पेट से जुड़ी कई समस्याओं में ये कारगर उपाय है। चाय में तेजपत्ते का उपयोग करके कब्ज, एसिडिटी और मरोड़ जैसी समस्याओं से राहत पा सकते हैं।
- रात को सोने से पहले तेजपत्ते का उपयोग करना अच्छी नीद के लिए बहुत फायदेमंद है। तेजपत्ते के तेल की कुछ बूंदों को पानी में मिलाकर पीने से अच्छी नींद आती है।
- किडनी स्टोन और किडनी से जुड़ी ज्यादातर समस्याओं के लिए तेजपत्ते का उपयोग बहुत लाभदायक होता है।
- तेजपत्ता शुगर के रोगियों में इंसुलिन की घटती–बढ़ती मात्रा को भी संतुलित करने में सहायता करता है।

सदैव संदेह करने वाले व्यक्ति के लिए प्रसन्नता न इस लोक में है और न ही परलोक में।

हरितालिका तीज

अंजू पाण्डेय

भगवान शिव एवं माता पार्वती को समर्पित हरतालिका तीज का व्रत हर साल भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को रखा जाता है। इस वर्ष 18 सितम्बर 2023 को है हरितालिका तीज व्रत।

हरतालिका तीज कठिन व्रतों में से एक है। इस दिन महिलाएं निर्जला व्रत रखकर माता पार्वती और शिव जी की पूजा करती हैं तथा हरतालिका तीज व्रत की कथा सुनती हैं।

कहा जाता है कि भगवान शिव को अपने पति के रूप में पाने के लिए माता पार्वती ने सबसे पहले इस व्रत को किया था। कहते है कि ऐसी तपस्या कभी किसी ने नहीं की होगी जो तपस्या माता पार्वती ने भगवान शिव के लिए की थी।

हरतालिका तीज का महत्व

भाद्रपद शुक्ल तीज को हरतालिका तीज का व्रत रखा जाता है। इस व्रत को सुहागिन महिलाएं अपने पति की लंबी आयु के लिए रखती है। जबकि कुंवारी कन्याएं मनचाहे वर की प्राप्ति के लिए इस व्रत को रखती हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार, माता पार्वती ने भगवान शिव को अपने पति रूप में पाने के लिए इस व्रत को किया था। देवी पार्वती की घोर तपस्या देखकर भगवान शिव उनके सामने आए और उन्हें अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया। इसके बाद से ही अविवाहित महिलाएं मनचाहे वर की प्राप्ति के लिए इस व्रत को करती है जबकि विवाहित महिलाएं अखंड सौभाग्य के लिए यह व्रत करती हैं।

हरतालिका तीज का व्रत निर्जला रखा जाता है। हरतालिका तीज के व्रत में 24 घंटे पानी भी नहीं पिया जाता है। सुहागिन महिलाएं पूरा श्रृंगार कर घर या मंदिर में जाकर माता पार्वती एवं भगवान शिव की पूजा करती है तथा दान भी करती है। अगले दिन सुबह पूजा करके व्रत खोलती है।

धरती पर जिस प्रकार मौसम में बदलाव आता है, उसी प्रकार जीवन में भी सुख-दुख आता जाता रहता है।

विश्वकर्मा पूजा

हरिशंकर

भगवान विश्वकर्मा की जयंती हर वर्ष 17 सितंबर को मनाई जाती है उन्हें संपूर्ण विश्व का पहला इंजीनियर माना जाता है। इस विशेष अवसर पर इंजीनियर, फैक्ट्री में काम करने वाले कारीगर, मजदूर,फैक्ट्रियों में लगे मशीनों की पूजा करते हैं।फैक्ट्री में काम करने वाले मजदूर और कर्मचारियों का इस दिन उत्साह देखते ही बनता है। इस दिन भगवान विश्वकर्मा की मूर्ति लाई जाती है और पूजा पाठ के बाद प्रसाद वितरण किया जाता है तथा अगले दिन एक विशेष मुहुर्त में मूर्ति का विसर्जन किया जाता है। ऐसी मान्यता है कि विश्वकर्मा जयंती के दिन पूजा पाठ करने से कारोबार बढ़ता है।

भगवान विश्वकर्मा दुनिया के पहले वास्तुकार थे। उन्होंने कई पौराणिक इमारतों की रचना की थी। माना जाता है कि भगवान विश्वकर्मा ने ही स्वर्गलोक और जगन्नाथपुरी का निर्माण करवाया था। इतना ही नहीं उन्होंने ही भगवान शिव का त्रिशूल और विष्णु भगवान का सुदर्शन चक्र तैयार किया था। देवी देवताओं के अस्त्र और शस्त्र के साथ–साथ इंद्र के महल तक का निर्माण उन्होंने ही किया था। यही वजह है कि सभी इंजीनियर और मशीनों से जुड़े लोग भगवान विश्वकर्मा को अपना भगवान मानते हुए श्रद्धापूर्वक उनकी पूजा करते हैं।

हमारे हिंदू शास्त्रों में विश्वकर्मा पूजा का काफी महत्व है। जहां कल कारखानें हैं वहां विश्वकर्मा की पूजा जरूर की जाती है।इससे वहां मां लक्ष्मी वास करती है और ऐसे संस्थान हमेशा लाभ में रहते हैं। इस दिन तकनीक से जुड़े लोग अपने औजारों की जरूर पूजा करते हैं। पहले उसकी साफ सफाई की जाती है उसके बाद विधि विधान से पूजा की जाती है।

कंपनियों में विश्वकर्मा पूजा के दिन सभी कर्मचारी, इंजीनियर और मजदूर मौजूद रहते हैं। इस दिन मूर्ति की स्थापना की जाती है उसके बाद विधि विधान से पूजा पाठ किया जाता है उसके बाद प्रसाद का वितरण किया जाता है। मूर्ति विसर्जन के समय कारिगर और मजदूर गाते खुशी मनाते हुए किसी नदी या तालाब के किनारे जाकर भगवान विश्वकर्मा को विसर्जित करते हैं इसी कामना के साथ कि प्रभु हमारी तकनीक को मजबूत करें ताकी ज़िंदगी तरक्की के रास्ते पर तेजी से चले।

हर वर्ष 17 सितंबर को मनाई जाती हैभगवान विश्वकर्मा की जयंती।

भगवान विश्वकर्मा दुनिया के पहले वास्तुकार थे उन्होंने कई पौराणिक इमारतों की रचना की थी।

देवी देवताओं के अस्त्र और शस्त्र के साथ-साथ इंद्र के महल तक का निर्माण विश्वकर्मा जी ने ही किया था।

इंजीनियर और मशीनों से जुड़े लोग भगवान विश्वकर्मा को अपना आराध्य मानते हुए श्रद्धापूर्वक उनकी पूजा करते हैं।

जो व्यवहार आपको दूसरों से पसंद ना हो, ऐसा व्यवहार आप दूसरों के साथ भी ना करें।

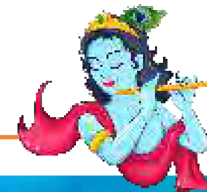

गणेश उत्सव

भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि से गणेश उत्सव की शुरुआत होती है। गणेश उत्सव का यह पावन पर्व 10 दिनों तक चलता है। वहीं अनंत चतुर्दशी के दिन इस उत्सव का समापन होता है। इस दौरान भक्त ढोल नगाड़ों के साथ बड़ी ही धूमधाम से बप्पा को अपने घर लाते हैं। पूरे गणेश उत्सव के दिनों में चारों ओर बप्पा के नाम का उद्घोष सुनाई पड़ता है। गणेश उत्सव का पर्व हिन्दू धर्म के प्रमुख त्योहारों में से एक है। गणपति बप्पा बुद्धि और शुभता के देवता हैं। उन्हें विघ्नहर्ता भी कहा जाता है, उनका हर नाम बहुत चमत्कारी है। कहा जाता है कि जहां पर बप्पा विराजते हैं वहां हर समय सुख–समृद्धि रहती है। राजधानी दिल्ली में धूमधाम से गणेश उत्सव मनाया जाता है। बच्चे, बूढ़े, महिलाएं सभी गणेश उत्सव में भाग लेते है। इस साल गणेश चतुर्थी 18 सितम्बर 2023 को है।

गणेश उत्सव सर्वप्रथम महाराष्ट्र के पुणे शहर में सार्वजनिक तौर पर सन् 1893 में मनाया गया था। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के नेता लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने गणेश उत्सव को राष्ट्रीय पहचान दिलाई। हालांकि सन् 1893 से पूर्व भी गणेश उत्सव मनाया जाता था परंतु यह काफी छोटे स्तर पर मनाया जाता था, धूमधाम से नहीं। उस समय इस अवसर पर घरों में लोग बस भगवान गणेश की पूजा कर लिया करते थे। तब मंदिरों या पंडालों में गणपति जी की स्थापना नहीं की जाती थी। इसके पीछे ब्रिटिश गुलामी, मुगलों समेत बाकी विदेशी आक्रमणकारियों की प्रताड़ना और आम लोगों का मनोबल कम होना वगैरह वजह बताई जाती है। स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी नेता लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने देशवासियों की एकता और उनका सामूहिक बल को बढ़ाने के लिए गणेश उत्सव पर बड़े आयोजन को धूमधाम से मनाने की शुरुआत की। गणपति पंडाल, पूजा–आरती और विसर्जन के अवसर पर श्रद्धालुओं के मेले को ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष को मजबूत करने के लिए उपयोग किया जाता था।

इस साल गणेश चतुर्थी 18 सितम्बर 2023 को है।

भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि से गणेश उत्सव की शुरुआत होती है।

10 दिनों तक चलने वाले गणेश उत्सव का अनंत चतुर्दशी के दिन समापन होता है।

गणेश उत्सव सर्वप्रथम महाराष्ट्र के पुणे शहर में सार्वजनिक तौर पर 1893 में मनाया गया था।

तबसे लगातार बढ़ता गणेश उत्सव महाराष्ट्र और भारत से बढ़कर दुनियाभर में मनाया जाने लगा है। धार्मिक दृष्टिकोण से जुड़े पर्व गणेश उत्सव को आजादी के संघर्ष की ताकत बढ़ाने, जागरूकता फैलाने के साथ ही जातिवाद और छुआछूत को दूर करने का माध्यम भी बनाया गया था।

अच्छे कर्म करने के बावजूद भी लोग केवल आपकी बुराइयाँ ही याद रखेंगे, इसलिए लोग क्या कहते है इस पर ध्यान मत दो।

अपने बच्चों को बुलिंग से कैसे बचाएं

छोटे बच्चे मानसिक और शारीरिक रूप से कमजोर होते हैं। अक्सर बच्चों की इस कमजोरी का फायदा स्कूल में बड़े बच्चे अथवा स्कूल के अन्य कर्मचारी उठाकर बच्चों के साथ भद्दे मजाक करते है या उनके साथ छेड़छाड़ करते है। साधारण शब्दों में अगर समझे तो बुलिंग का अर्थ होता है बदमाशी, डराना–धमकाना, धौंस दिखाना, बदतमीजी करना या शारीरिक तौर पर धक्का – मुक्की करना। बुलिंग शारीरिक, मौखिक या साइबर भी हो सकती है। आपका बच्चा स्कूल में किसी तरह की छेड़छाड़ या धक्का–मुक्की का शिकार या साइबर बुलिंग का शिकार तो नहीं हो रहा यह देखने की जिम्मेदारी आपकी है।

स्कूलों में बड़े बच्चे अक्सर ऐसे बच्चों की तलाश में रहते हैं जिनका स्वभाव शर्मिला होता है। ऐसे बच्चे अन्य बच्चों के साथ बहुत ज्यादा घुलते मिलते नहीं है। बड़े बच्चे ऐसे बच्चों के साथ छेड़छाड़ कर मस्ती मजाक करते हैं। कई बार तो स्कूल के कर्मचारी, स्कूल बस के चालक या सहायक भी ऐसे बच्चों पर कमेंट करके उन्हें छेड़ते है। कई बार इस तरह की घटनाएं गंभीर रूप भी ले लेती है और बच्चा स्कूल जाने से बचने लगता है। इसलिए आप नियमित रूप से अपने बच्चे के व्यवहार पर नजर रखें और उसके बदले हुए व्यवहार को जाने।

बच्चे में बुलिंग के संकेत

- ✓ बुलिंग का शिकार बच्चा अक्सर चिड़चिड़ा हो जाता है।
- ✓ बच्चा स्कूल जाने से मना करने लगता है।
- ✓ बच्चा घर पर पेट दर्द या अन्य शारीरिक दर्द का बहाना बनाने लगता है।
- ✓ बच्चा स्कूल से लौटने पर चुप रहता है घर से बाहर नहीं जाना चाहता।
- ✓ बच्चा किसी अजनबी या बड़े बच्चे को देखकर डरने लगता है।
- ✓ बच्चा माता-पिता से अपनी समस्या बताने से डरता है।
- ✓ बच्चा अपना बहुत ज्यादा समय मोबाइल फोन के साथ बिताना चाहता है।

बच्चे को बुलिंग से बचाने के उपाए

- ✓ बच्चे को शारीरिक छेड़छाड़ से बचने के लिए गुड-टच और बेड-टच के बारे में समझाएं।
- ✓ बच्चे को दोस्तों से बातचीत करें और उन्हें मिलकर खेलने के लिए प्रेरित करें।
- ✓ बच्चे के अध्यापकों से नियमित तौर पर बातचीत करते रहें।
- ✓ अपने बच्चे में आत्मविश्वास को बढ़ाएं।
- ✓ बच्चे के स्कूल में होने वाली गतिविधियों के बारे में उनसे जानकारी लें।
- ✓ मोबाइल का उपयोग सीमित समय के लिए ही करने दें।
- ✓ बच्चे को ध्यान, योग, भजन और पूजा के लिए नियमित तौर पर प्रेरित करें।
- ✓ बच्चे को हमेशा हमउम्र के बच्चे के साथ ही दोस्ती के लिए कहे।
- ✓ बच्चे को समझाएं बस में अथवा स्कूल में अगर कोई कमेंट करें तो सीधे घरवालों को बताएं।

जब जब इस धरती पर पाप, अहंकार और अधर्म बढ़ेगा, तो उसका विनाश कर पुन: धर्म की स्थापना करने हेतु, मैं अवश्य अवतार लेता रहूंगा।

लिखा-पढ़ी की भाषा ही है
हमारी मातृभाषा

अगर बच्चे की शिक्षा उसकी मातृभाषा में शुरू हो तो वह बहुत जल्दी ही सीखने लगता है।

मातृभाषा के साथ-साथ ही अन्य भाषाओं की जानकारी भी हमें हो तो हमारा जीवन सरल बनता है।

हमारा देश बहुभाषी लोगों का देश है और सभी भाषाओं का इतिहास बहुत समृद्धशाली है।

भाषा मनुष्य के विकास के साथ ही विकसित होती है। हम सभी को अपनी मातृभाषा से प्यार होना चाहिए। घर परिवार में जब कोई बच्चा जन्म लेता है तो परिवार वाले उसे अपनी ही भाषा में प्यार–दुलार करते हैं। जिससे बच्चा बहुत जल्दी ही शब्दों को बोलने की कोशिश करने लगता है। बच्चे को अपनी मातृभाषा से प्यार होता है। इसलिए अगर बच्चे की शिक्षा उसकी मातृभाषा में शुरू हो तो वह बहुत जल्दी ही सीखने लगता है। बच्चा जब अपनी भाषा में बात करता है तो माता–पिता उसके उच्चारण को सही करके उसे सही शब्द बोलने के लिए प्रेरित करते हैं।

मगर मातृभाषा के साथ–साथ ही अन्य भाषाओं की जानकारी भी हमें हो तो उससे हमारा जीवन सरल बनता है। हमें सभी भाषाओं का आदर करना चाहिए। सभी भाषाओं में साहित्य की भी उत्तम परंपरा है। अगर हम उनका अध्ययन करेंगे तो हमारे ज्ञान का भंड़ार और अधिक बढ़ेगा।भाषा का सीधा संबंध मातृभूमि से होता है।

हमारा देश बहुभाषी लोगों का देश है और सभी भाषाओं का इतिहास बहुत समृध्दशाली है। हमें जितनी अधिक भाषाओं की जानकारी होगी उतने ही ज्यादा शब्दों का भंड़ार हमारे पास होगा। इससे ही अन्य भाषाओं की सीखने की जिज्ञासा भी हमारे अंदर होनी चाहिए। जब हम भोजपूरी, राजस्थानी, मैथिली, बंगाली, कन्नड़, तमिल, तेलगू, मराठी, मलयालम और

मनुष्य को परिणाम की चिंता किए बिना लोभ- लालच और निस्वार्थ और निष्पक्ष होकर अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए।

गुजराती की बात करते हैं तो इन्हीं भाषा से उनका प्रयोग करने वाले राज्यों को पहचानते हैं। यह इन भाषाओं के प्रति हमारा बंधुत्व भाव है।

हमारे यहां काफी दिनों से अंग्रेजी भाषा का चलन बढ़ता जा रहा है। घर परिवार में अंग्रेजी बोलना गर्व की बात समझा जाता है। अपनी भाषा में बात करना पिछड़ेपन का लक्षण माना जाता है। मगर हम यह भूल जाते है कि हमारी मातृभाषा के कारण ही हमारी संस्कृति परंपराओं और हमारे पूर्वजों ने उन्नति की है। इसलिए मातृभाषा के प्रति हमें हमेशा सम्मान का भाव रखना चाहिए। हम अपने दैनिक जीवन में अपनी भाषा के शब्दों का जितना प्रयोग करेंगे जितनी अच्छी पुस्तकें पढ़ेंगे उतना ही हमारी भाषा श्रेष्ठ होगी।

रामायण एवं महाभारत हमारी संस्कृति के पवित्र ग्रंथ हैं। इन

ग्रंथों की विशेषता यह हैं कि यह हमारे देश की सभी भाषाओं में उपलब्ध है। भाषाओं के बीच किसी भी तरह की विषमता नहीं होनी चाहिए। भोजपूरी, राजस्थानी, मैथिली, बंगाली, मराठी, कोंकणी, बंगाली, हिंदी, तमिल कन्नड़ सभी हमारी अपनी भारतीय भाषाएं है हमारे मन में इन सभी के लिए आदर एव गौरव का भाव होना चाहिए। यही भाव हमें अन्य भाषाओं को सिखने समझने की प्रेरणा देता है।

मनुष्य को जीवन की चुनौतियों से भागना नहीं चाहिए और न ही भाग्य और ईश्वर की इच्छा जैसे बहानों का प्रयोग करना चाहिए।

हीरों का हार

एक जौहरी था। वह दुकादार होकर भी विचार और व्यवहार में संत था। लोभ और गलत ढंग से धन जोड़ने से वह घृणा करता था। एक बार एक महिला सबेरे–सबेरे उसके यहां आकर बोली–सेठजी! कोई सस्ता–सा हार चाहिये जो 15 रूपये के अन्दर ही मिल जाये; कारण मैं निर्धन हूं लेकिन मेरी लड़की हार के लिए बहुत हठ कर रही है। जौहरी ने कहा–15 रूपये क्या, मैं तुम्हें इससे भी कम 10 रूपये में ही एक हार दे देता, किंतु अल्मारी की चाभी घर पर ही रह गयी है। हां, दोपहर को या शाम को आना, तब दे सकूंगा।

बाद में दोपहर को सेठ भोजन करने घर चला गया और उस अल्मारी की चाभी घर से दुकान पर भेज दी। सायंकाल सेठ दुकान पर आया तो उसे मुनीम ने बता दिया कि 'दस रूपये वाला नकली हीरों का एक हार वह महिला ले गयी जिससे आपकी बात हुई थी।'

कई दिन बाद सेठ के पास एक ग्राहक आया जो वास्तविक हीरों का एक बहुमूल्य हार खरीदना चाहता था। सेठ ने अल्मारी में जहां वह हार रखा था, वहां उसे हार मिला नहीं। उसने मुनीम से उस हार के बारे में पूछा और जब उसने कहा, मुझे नहीं पता तो उसे नौकरी से निकाल दिया।

महीने भर बाद वही महिला फिर सेठ के पास आयी और गले की माला दिखाकर कहा–'इस हार का एक मनका टूट गया है, आप नया मनका वैसा ही मुझे दे दें। सेठ ने अल्मारी से एक मनका निकाल कर उसे दिया। महिला ने उसका मूल्य पूछा तो सेठ ने कहा–'तीस हजार रुपये' तब तो वह बड़ी परेशान हुई। सेठ ने कहा–'आपको विश्वास न होगा कि जो माला आप ले गयी थीं, उसका मूल्य साठ हजार रुपये है, पर वह आपको दस रुपये में मिल गया। यह गलती मुनीम की थी, आपकी नहीं। मुनीम को दुकान से हटा दिया, परंतु माला अपने एक बार यहां से खरीद ली, तो वह आपकी हो गयी।'

यह सुनकर उस महिला ने तुरंत गले से वह हार निकाला और सेठ को वापस करते हुए बोली –'सेठ जी! मैं निर्धन अवश्य हूं, पर इस प्रकार धोखे या भूल से मिला किसी का मुझे कुछ नहीं चाहिए। आप अपना यह हीरों का हार रखिये। बेचारा मुनीम निर्दोष है, उसे फिर से काम पर लगा लें, बस। महिला की बात से सेठ बहुत प्रसन्न हुआ। बोला–'आप विश्वास करें, मैं मुनीम को यहां फिर रख लूंगा, परंतु मेरी भी एक बात आप रख लें। महिला ने पूछा – वह क्या? सेठ ने सच्चे मोतियों का एक हार, जो पांच हजार रूपये का था, अल्मारी से निकाला और उस महिला के गले में डाल दिया। कहा–यह एक भाई की बहन के लिये छोटी सी भेंट है। महिला मान गयी और लौट गयी।

चलो खोज निकालें

आहार विषय से जुड़े कुछ सवाल पूछे गए हैं। उनके उत्तर चौंकोन में फंसे हैं, उन्हें ढूंढिए

1. भारत में सबसे ज्यादा उगाई जाने वाली फसल कौन–सी है?
2. भारत में सबसे ज्यादा गेहूं का उत्पादन कहां होता है?
3. ढोकला और फाफड़ा किस आटे का बनाया जाता है?
4. भारत में सेब का सबसे ज्यादा उत्पादन कहां होता है?
5. भारत में कौन–सा राज्य मकई की रोटी और सरसों के साग के लिए प्रसिद्ध है?
6. गुड़ और चीनी ये दोनों मीठी चीजें किससे बनाई जाती है?
7. पनीर किससे बनाया जाता है?
8. बच्चों को मक्खन खाकर तंदुरुस्त रहने का संदेश देने वाले भगवान कौन हैं?

ज	क	श्मि	जा	ग	पं	जा	ब
म्मु	चा	व	ल	औ	मा	र	भ
औ	ग	जा	उ	बा	ती	दू	ग
र	मा	दू	त्त	बे	स	न	वा
क	प्र	ध	र	दा	ता	डी	न
श्मी	मी	शि	प्र	र	भा	जी	कृ
र	दा	रा	दे	व	पा	क	ष्ण
ग	न्ना	मं	श	द	क	व	ती

उत्तर – चावल, उत्तर प्रदेश, बेसन, जम्मू और कश्मीर, पंजाब, भगवान कृष्ण

शब्दों के लिंग

शब्दों के लिंग बदल कर खाली जगह में लिखिए।

पुलिंग	*स्त्रीलिंग*
1. वर	क. ....
2.	ख. नेत्री
3. फूफा	ग. ....
4.	घ. गुड़िया
5.	च. औरत

उत्तर – 1. वधू, 2. नेता, 3. बुआ, 4. गुड्डा, 5. मर्द

दिमाग की बत्ती

ब के पिताजी अ हैं लेकिन अ का पुत्र ब नहीं है, तो उनके बीच सही संबंध क्या है।

उत्तर – ब अ की पुत्री है।

कैसे तैयार होते हैं तारे ?

हम सभी आकाश में तारों की ओर बहुत आकर्षित होते हैं। चाहे वह संत ज्ञानेश्वर हों, जो 'चंद्र को चंद्रिका, शंभू को अंबिका' के रूप में वर्णित करते हैं या फिल्मों में लाखों तारे आसमान में, एक मगर ढूंढे ना मिला, ऐसे गीत लिखने वाले कवि हों... इन सितारों से कई लोग लगातार आकर्षित हुए हैं। जब आप आकाश में रात को टिमटिमाते तारे देखते हैं, तो इन तारों में क्या होगा, ये कैसे तैयार होते हैं, ये कैसे चमकते हैं–ऐसे सवाल हमारे मन में आते हैं। हर एक तारा गर्म गैस से भरा एक चमकीला विशाल गोला है। इसमें मुख्य रूप से हाइड्रोजन गैस होती है। इसके अलावा हीलियम, ऑक्सीजन, आयरन, निकल, जिंक जैसे तत्व भी तरल रूप में होते हैं। अंतरिक्ष में गति करते ही गैस के कण एक साथ आ जाते हैं। यह वायु के कणों को अधिक आकर्षित करता है और वे धूल के एक बादल में इकट्ठे होते हैं। इससे एक बड़ी गांठ बन जाती है। ऊपरी कण, निचले कणों को दबाते हैं। जब यह दबाव बढ़ता है, तो तापमान बढ़ जाता है जिससे कण चमकने लगते हैं और फिर एक तारा बनता है। जितनी अधिक सामग्री एक साथ आती है, उतना ही अधिक तारे के आकार, चमक और तापमान में फर्क पड़ता है।

बोर्ड पर कुछ राष्ट्रीय दिवसों के नाम अक्षरों के क्रम बदलकर लिखे हुए हैं। उन्हें सही करके लिखिए।

उलटा पुलटा

तं स्व त्र दि व ता स

तं त्र दि ण व ग स

भो प रा ष्ट्री य क्ता दि व उ स

ज्ञा ष्ट्री य वि न रा दि व स

दि ति व क्रां स

वा दि यु व स

उत्तर-स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त), गणतंत्र दिवस (26 जनवरी), राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस - 24 दिसम्बर, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस-28 फरवरी, क्रांति दिवस-9 अगस्त, युवा दिवस - 12 जनवरी

कौन है वो

गोलू बंदर ने कुछ विशेषताएं बताई हैं। उस आधार पर पहचानिए कि वो कौन सा प्राणी है

1. वफादार और मेहनती जनवर है।
2. भगवान शिव का वाहन है।
3. किसानों का परम मित्र है।
4. शाकाहारी है।

उत्तर - बैल

पत्थर और मानव

एक लड़का था। उसका नाम मानव था। उसके घर के पीछे एक टेढ़ा–मेढ़ा रास्ता था। मानव पक्के रास्ते के बजाय उसी रास्ते से पाठशाला जाता था। उस रास्ते पर एक पत्थर पड़ा हुआ था। एक बार वह नई सइकिल लेकर जा रहा था। साइकिल उस पत्थर से टकराकर गिर पड़ी। वह क्रोधित हो उठा और उसने निश्चय किया कि आज वह इस पत्थर को जमीन से निकाल कर फेंक देगा। उसने पाठशाला खत्म होने के बाद चार–पांच मित्रों को बुलाया और सभी वह पत्थर निकालने का प्रयास करने लगे। फावड़े के एक ही वार से पत्थर जमीन के बाहर निकल आया। मानव जिसको एक भारी–भरकम चट्टान समझ रहा था, दरअसल वह एक छोटा–सा पत्थर था। उसे पश्चाताप हुआ कि काश ! उसने पहले ही इसे निकालने का प्रयास किया होता तो इतनी तकलीफ नहीं झेलनी पड़ती। हम भी कई बार जिन्दगी में आने वाली छोटी–छोटी बाधाओं को बहुत बड़ा समझ लेते हैं और उनसे निपटने के बजाय कष्ट उठाते रहते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम बिना समय गंवाए उन बाधाओं से लड़ें।

बिल्ली ने कितना दूध पीया?

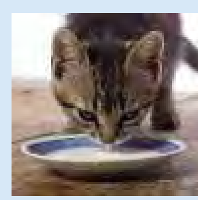

एक गांव के ग्वाले के घर की खिड़की का दरवाजा थोड़ा मुड़ा हुआ था। इसी बात का फायदा उठा कर एक बिल्ली प्रतिदिन घर में रखा हुआ गाय का कुछ दूध चुपके–चुपके पी लेती थी। जब दूध डेयरी में जाता तो 200 मिली दूध कम रहता था। ऐसा 20 दिन तक हुआ। दूध कैसे कम हो रहा है, इस पर ग्वाले ने नजर रखी तो उसने बिल्ली को दूध की ओर जाते देखा। उसने उसका पीछा किया और खिड़की की मरम्मत की। अब बताओ पिछले 20 दिनों में बिल्ली ने कितना दूध पी लिया था।

उत्तर – 4 लीटर

संगठन गढ़े चलो सुपंथ पर बढे चलो

संगठन गढ़े चलो सुपंथ पर बढे चलो।
भला हो जिसमें देश का , वो काम सब किये चलो।।

युग के साथ मिल के सब , कदम बढ़ाना सिख लो,
एकता के स्वर में गीत, गुनगुनाना सिख लो।
भूल कर भी मुख से जाति, पंथ की न बात हो,
भाषा प्रांत के लिए, कभी न रक्त – पात हो।

फुट का घड़ा भरा है , फोड़ कर बढे चलो।
भला हो जिसमें देश का, वो काम सब किये चलो।

संगठन गढ़े चलो , सुपंथ पर बढे चलो।
भला हो जिसमे देश का , वो काम सब किये चलो।।

आ रही है आज चारों ओर से यही पुकार
हम करेंगे त्याग मातृभूमि के लिए अपार
कष्ट जो मिलेंगे, मुस्कुरा के सब सहेंगे हम
देश के लिए सदा, जियेंगे और मरेंगे हम
देश का ही भाग्य, अपना भाग्य है ये सोच लो।
भला हो जिसमें देश का, वो काम सब किये चलो।

संगठन गढ़े चलो , सुपंथ पर बढे चलो।
भला हो जिसमें देश का, वो काम सब किये चलो।।

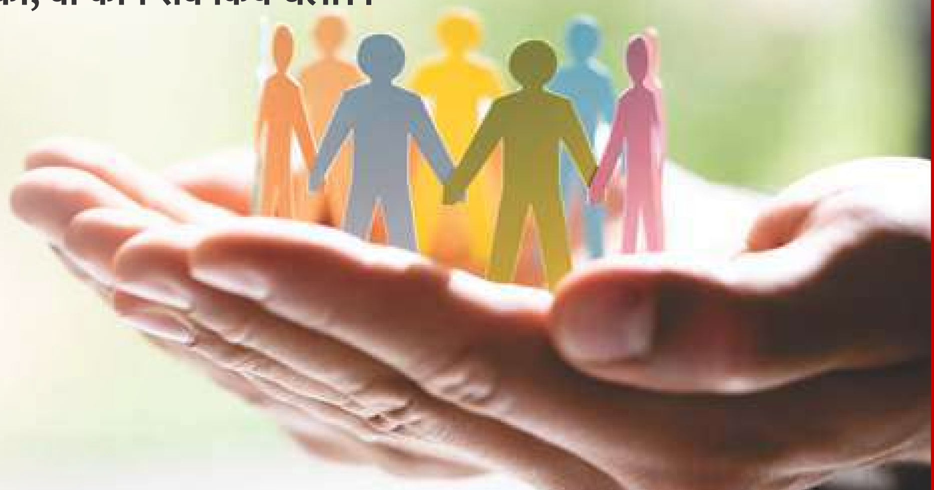

समाचार पत्र पंजी. संख्या : DELHIN/2018/76804
प्रकाशन तिथि : 01-09-2023
प्रेषण तिथि : 03-04 (मासिक)

डाक पंजीकरण संख्या : DL (C) 11/1437/2022-24
Posted at - New Delhi GPO, New Delhi-110001

मैगज़ीन पोस्ट रजिस्ट्रेशन
No. DL (DS) - 55/MP/2022-23-24

किताबवाले

द्वारा प्रकाशित

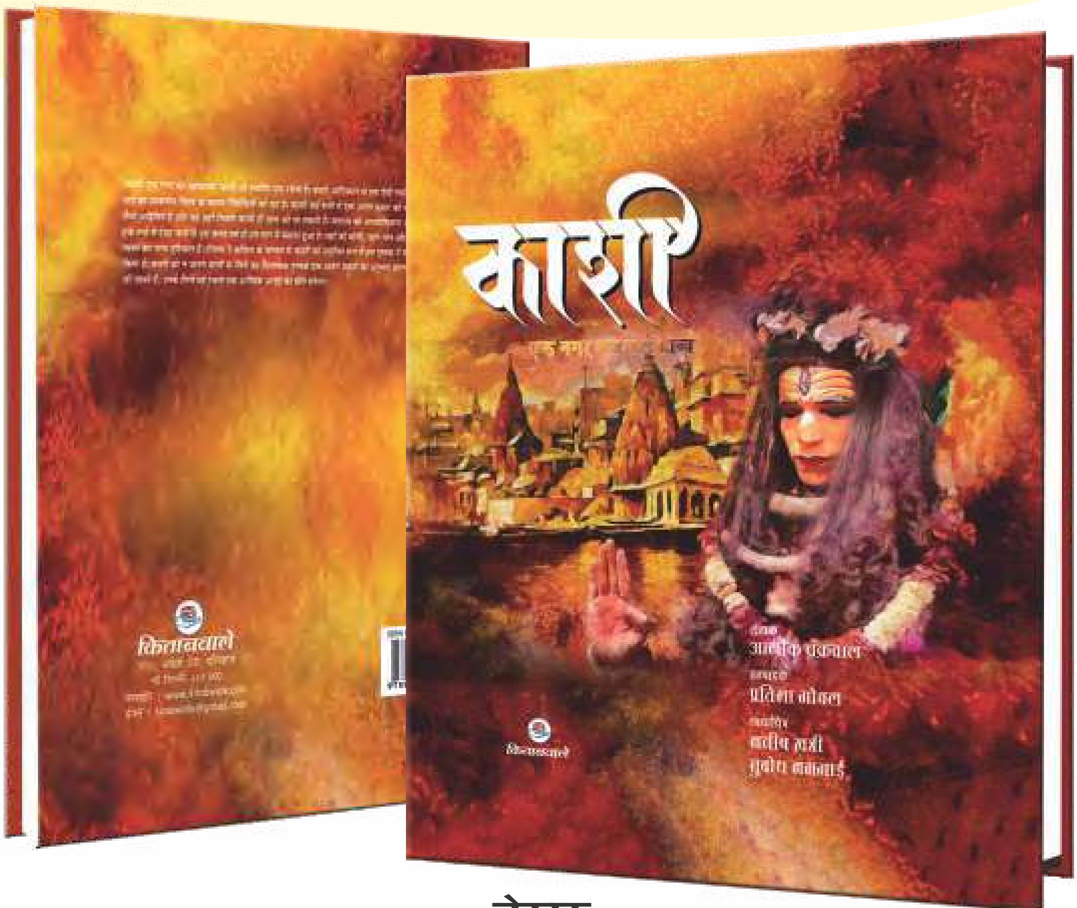

लेखक
आलोक चक्रवाल

सम्पादक
प्रतिभा गोयल

7/31, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

वेबसाईट : www.kitabwale.com | ईमेल : kitabwale@gmail.com

प्रेषक : इंद्रप्रस्थ संवाद, 8 बी/6428–29, प्रथम तल,
आर्यसमाज रोड, देवनगर, नई दिल्ली–110005